Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِیۡنَ اتَّخَذُوۡا دِیۡنَکُمۡ ہُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡکِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِکُمۡ وَالۡکُفَّارَ اَوۡلِیَآءَ وَاتَّقُوا اللّٰہَ اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठा और खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

वर्ष- 7
अंक- 4

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

23 जमादी सानी 1443 हिज्री कमरी 27 सुलह 1401 हिज्री शम्सी 27 जनवरी 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

लोगों की फ़साहत और बलाग़त शब्दों के अधीन होती है परन्तु कुरआन में सारे शब्द मोती की तरह पिरोए गए हैं कोई एक स्थान से उठाकर दूसरी स्थान नहीं रखा जा सकता और किसी को दूसरों शब्द से बदला नहीं जा सकता

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

10 दिसम्बर 1899 ई

दिनांक इतवार 9 बजे सुबह, कादियान

मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब से जो लाहौर से तीन साल के अंदर निशान चाहने वाली भविष्यवाणी के इश्तिहार का अंग्रेज़ी अनुवाद कराकर साथ लाए थे। सैर पर जाने से पहले फ़रमाया: "आपने इस काम में ख़ूब हिम्मत की" फ़रमाया

सवाब प्राप्त करने का मार्ग

"इस में अल्लाह तआला की हिक्मत है कि हमने अंग्रेज़ी नहीं पढ़ी कि आप लोगों को सवाब में शामिल करना चाहता है। अंग्रेज़ी हम पढ़े हुए होते तो उर्दू की तरह उसके भी दो-चार पृष्ठ हर दिन हम लिख दिया करते परन्तु ख़ुदा ने चाहा कि जैसे आप हैं और मौलवी मुहम्मद अली साहिब हैं आप लोगों को भी यह सवाब दिया जाए।"

(इस पर मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब ने निवेदन किया कि यह हिम्मत और सवाब तो मौलवी मुहम्मद अली साहिब का ही है।

फ़रमाया:"आलमगीर(बादशाह) के ज़माना में मस्जिद शाही को आग लग गई तो लोग दौड़े दौड़े बादशाह सलामत के पास पहुंचे और निवेदन किया कि मस्जिद को तो आग लग गई। इस ख़बर को सुन कर वह शीघ्र सिज्दा में गिरा और शुक्र अदा किया। हाशिया नशीनों ने आशचर्य से पूछा कि हुज़ूर सलामत यह कौन सा वक़्त शुक्र करने का है कि ख़ुदा के घर को आग लग गई और मुसलमानों के दिलों को सख़्त सदमा पहुंचा है तो बादशाह ने कहा कि मैं एक ज़माना से सोचता था और ठण्डी सांस भरता था कि इतनी बड़ी बड़ी मस्जिद जो बनी है और इस इमारत के माध्यम से हज़ारों लोगों को फ़ायदा पहुंचता है। काश कोई ऐसी मार्ग होता कि इस नेक कार्य में कोई मेरा भी हिस्सा होता , परन्तु चारों तरफ़ से मैं इस को ऐसा सम्पूर्ण और बिना दोष के देखता था कि मुझे कुछ सूझ न सकता कि इस में मेरा सवाब किसी तरह हो जाए। अत: आज ख़ुदा तआला ने मेरे लिए सवाब प्राप्त करने की एक राह निकाल दी। वल्लाहो समीउन अलीम।"

अन्य नबियों के चमत्कार

फ़रमाया:"दुनिया के अंदर जो निशान हज़रत मूसा या अन्य नबियों ने इस तरह के दिखाए जैसा कि सोटे से रस्सी का साँप बनाना ये सब शंका में डालने वाली बातें हैं। विशेषत: इस ज़माना के बीच जब कि हर तरह के तमाशे मदारी लोग दिखाते हैं कि इन्सान की समझ में हरगिज़ नहीं आता कि यह बात किस तरह से हो गई और अंग्रेज़ लोग ऐसे ऐसे करतूत तमाशे के दिखाते हैं कि मरा हुआ आदमी वापस आ जाता है और टूटी हुई चीज़ें साबित दिखाई देती हैं। जैसा कि आईन अकबरी में भी अबुल-फ़ज़ल ने एक क़िस्सा वर्णन किया है कि एक तमाशा दिखाने वाला आसमान पर लोगों के सामने चढ़ गया और ऊपर से इसके अंग एक एक हो कर गिरे और इस की बीवी सती हो गई परन्तु वह आसमान से फिर उतर आया और उसने अपनी बीवी के लिए मांग की और एक वज़ीर पर शंका की कि इस ने छिपा रखी है और यह इस पर आशिक़ है और फिर उसकी तलाशी की इजाज़त बादशाह से लेकर उसी की बग़ल से निकाल ली।"

फ़रमाया:" ऐसी अवस्था में फिर सिवाए इसके और कुछ बात बाक़ी नहीं रहती है कि इन्सान ईमान से काम ले और निबयों के कामों को ख़ुदा की तरफ़ से समझे और तमाशा दिखाने वाले के कामों को धोखा और फ़रेब ख़्याल करे और इस तरह से ये मामला बहुत नाज़ुक हो जाता है।"

क़ुरआन शरीफ़ चमत्कार है

परन्तु ख़ुदा तआला ने क़ुरआन शरीफ़ को जो चमत्कार प्रदान फ़रमाया है, वह उच्च स्तर के आचरण की शिक्षा और सभ्यता के नियम का है और इस बलाग़त और फ़साहत का है जिस का मुक़ाबला कोई इन्सान हरगिज़ नहीं कर सकता और ऐसा ही चमत्कार ग़ैब की ख़बरों और भविष्यवाणियों का है। इस ज़माना का कोई तमाशा दिखाने में उस्ताद ऐसा करने का हरगिज़ दावा नहीं करता। और इस तरह अल्लाह तआला ने हमारे निशानों को एक अन्तर साफ़ प्रदान फ़रमाया है, ताकि किसी व्यक्ति को बहाना करने का का न रहे और इस तरह ख़ुदा तआला ने अपने निशानों को खोल खोल कर दिखाए हैं जिनमें कोई शक तथा शंका अपना दख़ल नहीं पैदा कर सकता।"

(एक व्यक्ति ने निवेदन किया की कि कोई एतराज़ करता था कि मिर्ज़ा साहिब ने लेखराम को आप मरवा डाला है।

फ़रमाया:" यह एक बेहूदा और झूटी बात है, परन्तु उन लोगों को यह तो विचार करना चाहिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू राफ़े और कअब को क्यों क़तल करवा दिया था।"

फ़रमाया:"हमारी भविष्यवाणियां सब इक़तिदारी भविष्यवाणियां हैं और ये निशान है कि वे अल्लाह तआला की तरफ़ से होती हैं।"

क़ुरआन करीम फ़साहत तथा बलाग़त (सारगर्भिता)

फ़रमाया:"लोगों की फ़साहत और बलाग़त शब्दों के अधीन होती है और इस में सिवाए तुक बन्दी के और कुछ नहीं होता। जैसा कि एक अरब ने लिखा है कि سافرت الی روم وانا علیٰ جمل ماتوم मैं रोम को रवाना हो और मैं एक ऐसे ऊंट पर सवार हुआ जिसका पेशाब बंद था। ये शब्द केवल तुक बन्दी के लिए लाए गए हैं। यह क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार है कि इस में सारे शब्द ऐसे मोती की तरह पिरोए गए हैं और अपने-अपने स्थान पर रखे गए हैं कि कोई एक स्थान से उठाकर दूसरी स्थान नहीं रखा जा सकता और किसी को दूसरों शब्द से बदला नहीं जा सकता, परन्तु बावजूद उसके तुक बन्दी और सारगर्भिता के समस्त बातें मौजूद हैं।"

(एक व्यक्ति ने किसी सूफ़ी गद्दीनशीन की प्रशंसा की कि वह आदमी ज़ाहिर में नेक मालूम होता है और यदि उसको समझाया जाए तो आशा की जा सकती है कि वह इस बात को पा जाए और निवेदन की कि मेरा उसके साथ एक ऐसा सम्बन्ध है कि यदि हुज़ूर मुझे एक ख़त उन के नाम लिख दें तो मैं ले जाऊं आशा है है कि उन को फ़ायदा हो। फ़रमाया:

"आप दो चार दिन और यहां ठहरें। मैं प्रतीक्षा करता हूँ कि अल्लाह तआला ख़ुदबख़ुद दृढ़ता के साथ कोई बात दिल में डाल दे , तो मैं आपको लिख दूं।" फिर फ़रमाया

"जब तक इन लोगों को इस्तिक़ामत , नेक नीयत के साथ कुछ दिन की संगत न प्राप्त हो जाए, तब तक मुश्किल है। चाहिए कि नेकी के लिए दिल जोश मारे और ख़ुदा की रज़ा को प्राप्त करने के लिए दिल परेशान हो।"(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 332 से 334 प्रकाशन 2008 ई क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

"ख़ुदा की कसम आप इस्लाम के लिए आदम-ए-सानी और ख़ैरुल इनाम (मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम) के अनवार के प्रथम द्योतक थे।" (हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"सच्च तो यह है कि हर ज़माना में जो व्यक्ति सिद्दीक़ के कमालात हासिल करने की इच्छा करे उसके लिए ज़रूरी है कि अबू बकर वाली विशेषताएं और
स्वभाव को अपने अंदर पैदा करने के लिए जहां तक सम्भव हो मुजाहिदा करे और फिर जहाँ तक सम्भव हो दुआ से काम लें।" (हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के कमालात और मनाक़िब-ए-आलीया

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 3 दिसम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन शुरू होगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम अब्दुल्लाह था और उसमान बिन आमिर उनके पिता का नाम था। गोत्र अबू बकर था और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के उपनाम "अतीक़" और "सिद्दीक़" थे। यह कहा जाता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का जन्म आमुल फ़ील के दो वर्ष छः माह बाद 573 ई. में हुआ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम जैसा कि मैं ने कहा अब्दुल्लाह था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का ताल्लुक़ क़ुरैश के क़बीला बनू तीम बिन मुर्राह से था। जाहिलियत में आप रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम अब्दुल काबा था जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तबदील करके अब्दुल्लाह रख दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता का नाम उसमान बिन आमिर था और उनका गोत्र अबुल कहाफ़ा था और माता का नाम सलमा पुत्री सख़्र बिन आमिर था और उनका गोत्र उम्मुल ख़ैर था। एक कथन के अनुसार आप रज़ियल्लाहु अन्हो के माता का नाम लेला पुत्री सख़्र था।

(अल् इस्तेयाब फ़ी मारेफ़तिल सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 91 से 92 अब्दुल्लाह बिन अबी कहाफ़ि,दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, 2002 ई.)(अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साद भाग तीन, पृष्ठ 90 ومن بني تيم بن مرّة بن كعب،داراحياء التراث, दारुल अहया अल् तुर्रास अल् अरबी बेरूत 1996 ई.) (ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल अल्सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 204 अब्दुल्लाह बिन उसमान, दारुल फ़िक़र बेरूत, 2003 ई.)(असाब, भाग 4 पृष्ठ 145 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का गोत्र सातवीं पुश्त में मुर्रह पर जा कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलता है। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 57 उर्दू अनुवाद अंजुम सुलतान शहबाज़ बिक कॉर्नर शो-रूम जेहलम)

इसी तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की माता का सिलसिला नसब नन्हियाल और दधियाल दोनों तरफ़ से छट्ठी पुश्त पर जा कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिल जाता है।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ की ज़िंदगी के सुनहरे वाक़ियात अज़ अब्दुल मालिक मुजाहिद, पृष्ठ 29 प्रकाशन दारुस्सलाम)

अबू क़हाफ़ा अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता की पत्नी उम अलख़ैर उनके चचा की बेटी थीं।(अर्रूज़तुल अन्फ भाग अव्वल, पृष्ठ 430 "इस्लाम अबी बिक्र" दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत संस्करण प्रथम)

अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की माता उनके पिता की चचा की बेटी थीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के माता पिता हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद भी ज़िंदा रहे और इन दोनों ने अपने बेटे अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का विरसा पाया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद पहले उनकी माता की वफ़ात हुई।

(ओसोदुल ग़ाबा, भाग 7 उम्मुल ख़ैर पुत्री सक्खर ज़ेर हर्फ़ अलख़ा, पृष्ठ 314-315 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2008 ई.)

और फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता ने 14 हिज्री में 97 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई।

(अल् असाबा, भाग 3 हर्फ़ुल ऐन ज़ेर शब्द उसमान बिन आमिर, पृष्ठ 424 दारुल फ़िक्र 2001 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता और माता दोनों को इस्लाम क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता के ईमान लाने का वाक़िया इस प्रकार है कि आपके पिता फ़तह मक्का तक ईमान नहीं लाए थे। उस वक़्त उनकी बीनाई जा चुकी थी। फ़तह मक्का के वक़्त जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद हराम में दाख़िल हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने पिता को लेकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको देखा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। अबू बकर! तुम इस बूढ़े उम्र रसीदा व्यक्ति को घर ही रहने देते। मैं ख़ुद उनके पास आ जाता। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह इस बात के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते न यह कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ लाते। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने बिठाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके सीने पर हाथ फेरा और फ़रमाया कि इस्लाम ले आएं। आप सलामती में आ जाऐंगे। इसलिए अबू क़हाफ़ा ने इस्लाम क़बूल कर लिया। (अल् आसाबा फ़ी तमीईज़ अलसहाब लाबन हिज्र, भाग 4 पृष्ठ 374-375 वर्णन उसमान बिन आमिर, अबू कहाफ़ा,दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अबू क़हाफ़ा को फ़तह मक्का के दिन लाया गया तो उनका सिर और दाढ़ी सग़ामा की तरह सफ़ैद हो चुके थे। सग़ामा के बारे में कहा जाता है कि यह सफ़ैद रंग का एक फूल होता था जो पहाड़ों पर उगता था। बहरहाल बिल्कुल सफ़ैद बाल थे। दाढ़ी बहुत सफ़ैद थी इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उसे किसी और रंग से तबदील कर दो अर्थात उस पर ख़िज़ाब लगा दो। रंग कर दो ज़्यादा बेहतर है लेकिन काला-रंग से बचोगे।

(सही मुस्लिम, किताब अल् अदब, बाब फी सबग़ अश्शईर व तग़य्यरश्शअब हदीस 3911 अनुवादक, भाग 11 पृष्ठ 198-199)

यह अर्थ नहीं था कि काला-रंग कोई बुराई है बल्कि शायद आप ने ख़्याल फ़रमाया हो कि आयु के इस हिस्सा में बिल्कुल काले रंग के बाल चेहरे पर शायद मुनासिब न लगें तो बहरहाल आपने कहा उसको रंग देना चाहिए, ख़िज़ाब लगा देना चाहिए।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की माता इबतिदाई इस्लाम क़बूल करने वालों में शामिल थीं। इस का वर्णन सीरत हल्बिया में इस तरह है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दार-ए-अर्क़म में तशरीफ़ ले गए ताकि वहां आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमआवर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा छुप कर अल्लाह ताआला की इबादत कर सकें और इस वक़्त मुस्लमानों की संख्या अड़तीस (38) थी। इस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में दरख़ास्त की कि मस्जिद हराम में तशरीफ़ ले चलें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अबूबकर हमारी संख्या थोड़ी है लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इसरार करते रहे यहां तक कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने समस्त सहाबा के साथ मस्जिद हराम में तशरीफ़ लाए। वहां हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों के सामने ख़िताब किया जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़र्मा थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़िताब में लोगों को अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ दावत दी। इस तरह आप रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद पहले ख़तीब हैं जिन्हों ने लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया। इस पर मुशरेकीन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और मुस्लमानों को मारने के लिए टूट पड़े और उन्हें बुरी तरह मारा पीटा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को पैरों तले रौंदा गया और उन्हें ख़ूब मारा पीटा गया। उत्बा बिन रबीह हज़रत अबूबकर को उन जूतों से मार रहा था जिस पर दोहरा चमड़ा लगा हुआ था। उसने उन जूतों से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के चेहरे पर इतना मारा कि मुँह सूज जाने की वजह से आप रज़ियल्लाहु अन्हो के चेहरे पर नाक की भी पहचान नहीं हो पा रही थी। फिर बनू तीम के लोग भागते हुए आए और मुशरिकीन को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से दूर किया। बनू तीम के लोगों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को एक कपड़े में डाल कर उठाया और उन्हें उनके घर में ले गए और उन्हें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की मौत में कोई शक नहीं था। इस हद तक मारा था। इसके बाद बनू तीम के लोग वापिस आए और मस्जिद में, ख़ाना काअबा में दाख़िल हुए और कहा ख़ुदा की क़सम! अगर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौत हो गए तो हम ज़रूर उत्बा को क़तल कर देंगे, जिसने ज़्यादा मारा था। फिर वे लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास वापस आए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता अबू क़हाफ़ा और बनू तीम के लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हो से बात करने की कोशिश करने लगे परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हो बीहोशी की वजह से कोई उत्तर नहीं देते थे यहां तक कि दिन के आख़िरी हिस्सा में आप रज़ियल्लाहु अन्हो बोले और सबसे पहले यह पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? परन्तु लोगों ने उनकी बात का उत्तर न दिया परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हो बार बार यही प्रश्न दोहराते रहे। इस पर आपकी माता ने कहा। ख़ुदा की क़सम मुझे तुम्हारे साथी के विषय में कुछ मालूम नहीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी माता से कहा कि आप हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की बहन उम्मे जमील पुत्री ख़िताब के पास जाएं। उम्मे जमील रज़ियल्लाहु अन्हा पहले ही मुस्लमान हो चुकी थीं लेकिन अपने इस्लाम को छुपाया करती थीं। आप उनसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाल दरयाफ़त करें। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की माता उम्मे जमील के पास गईं और उनसे कहा कि अबू बकर, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में पूछते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया : मैं मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नहीं जानती और न ही अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को। फिर उम्मे जमील ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की माता से कहा कि क्या आप चाहती हैं कि मैं आपके साथ चलूं? उन्होंने कहा हाँ। फिर वह उनके साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आएं तो उम्मे जमील ने आपको ज़ख़मों से चूर ज़मीन पर पड़ा देखा तो चीख़ उठीं और कहा कि जिन लोगों ने आपके साथ यह किया है वह निसंदेह फ़ासिक़ लोग हैं और मैं उम्मीद रखती हूँ कि अल्लाह ताआला उनसे बदला लेगा। तब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे पूछा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? उम्मे जमील ने कहा यह तुम्हारी माता भी सुन रही हैं। आप ने कहा वह तुम्हारा राज़ ज़ाहिर नहीं करेंगी। इस पर उम्मे जमील ने कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ैरीयत से हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस वक़्त कहाँ हैं? उम्मे जमील ने कहा दार-ए-अर्क़म में। हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इश्क़ के इस उच्च स्थान को देखें, जब यह बात सुनी तो फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा ख़ुदा की क़सम! मैं न खाना चखूंगी और न पानी पियूँगा यहां तक कि पहले मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हूँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की माता ने बताया कि हमने उन्हें अर्थात अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को कुछ देर रोके रखा यहां तक कि जब लोगों का बाहर आना जाना थम गया और लोग पुरस्कून हो गए तो हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो को लेकर निकले। आप रज़ियल्लाहु अन्हो मेरे सहारे से चल रहे थे यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंच गए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो पर शदीद रिक़्क़त तारी हो गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की यह हालत देखी तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपको बोसा (प्यार करने) देने के लिए हज़रत अबू बकर ऊपर झुके और मुस्लमान भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर झुके। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इश्क़! मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमपर क़ुर्बान हों। मुझे कोई तकलीफ़ नहीं अतिरिक्ति इसके जिन लोगों ने मेरे मुँह पर चोटें लगाई हैं और यह मेरी माता अपने बेटे से अच्छा सुलूक करने वाली हैं। यह संक्षेप में बातें कीं। सम्भव है कि अल्लाह ताआला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके तुफ़ैल उनको आग से बचा ले। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी माता के बारे में कहा कि सम्भव है कि अल्लाह ताआला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल उनको आग से बचा ले अर्थात ईमान ले आएं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो की माता के लिए दुआ की और उन्हें इस्लाम की तरफ़ दावत दी जिस पर उन्होंने इस्लाम क़बूल लिया।(सीरतुल हल्बिया भाग प्रथम पृष्ठ 418-419 استخفائهﷺ و اصحابه فی دار الارقم दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) इस तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की माता ने शुरू में ही इस्लाम क़बूल कर लिया था ।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की पैदाइश के बारे में जो रवायात हैं इन में इसाबा जो सहाबा की जीवनी पर एक मुस्तनद किताब है इसके अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो सिद्दीक़ आमुल फ़ील के दो साल छ: माह बाद पैदा हुए।

(अल असाब फ़ी तमीईज़ अल सहाब, भाग 4 पृष्ठ 145 अब्दुल्लाह बिन उसमान, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, 2005 ई.)

तारीख़ तिब्री और तबक़ात अलकुबरा में लिखा है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो आम अलफ़ील के तीन वर्ष के बाद पैदा हुए।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 151 वर्णन वसी अबी बकर दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 348 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

इसी तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के लक़्ब हैं। दो उपनाम प्रसिद्ध हैं जो वर्णन किए जाते हैं। एक "अतीक़" और एक "सिद्दीक़"। अतीक़ के नामकरण का कारण यह है? इस बारे में लिखा है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। اَنْتَ عَتِيْقُ اللهِ مِنَ النَّارِ कि तुम अल्लाह की तरफ़ से आग से आज़ाद करदा हो। अत: उस दिन से आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अतीक़ का उपनाम दिया गया।

(सुंन अल् तिरमिज़ी, किताब अल् मनाकिब, बाब त्स्मिया अतीक़ा, हदीसा 3679)

कुछ इतिहासकार उपनाम के बजाय हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम अतीक़ वर्णन करते हैं। वह कहते हैं यह उपनाम नहीं बल्कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम था लेकिन यह दरुस्त नहीं है। इसलिए अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु अन्हु ने तारीख़ खुलफ़ा में इमाम नवावी के हवाले से लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम अब्दुल्लाह था और यही ज़्यादा प्रसिद्ध और दरुस्त है और यह भी कहा जाता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम अतीक़ था लेकिन दरुस्त वही है जिस पर अक्सर उल्मा सहमत हैं कि अतीक़ आप का उपनाम था न कि नाम।

(तारीख़ अल्ख़लफ़ा-पृष्ठ 27 दारुल किताब अल् अरबी बेरूत 1999 ई.)

सीरत इब्ने हिशाम में लक़्ब अतीक़ की वजह यह वर्णन की गई है कि आपके चेहरे की ख़ूबसूरती की वजह से और आपके हुस्न-ओ-जमाल की वजह से आपको अतीक़ कहा जाता था।

(सीरतुल नाबविय्या ले इब्ने हिशाम इस्लाम अबी बकर व् मिन मा, पृष्ठ 117 दार इब्ने हज़्म 2009)

सीरत इब्ने हिशाम की शरह में अतीक़ लक़्ब की निर्मलिखित कारण वर्णन किए गए हैं। अतीक़ का अर्थ है اَلْحَسَنُ अर्थात उम्दा विशेषताओं वाला। मानों कि आपको मुज़म्मत और उयूब से बचाया गया था। यह भी कहा जाता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अतीक़ इसलिए कहा जाता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की माता का कोई बच्चा ज़िंदा नहीं रहता था। उन्होंने नज़र मानी कि अगर उनके हाँ बचा हुआ तो वह उसका नाम अब्दुल काबा रखेंगी और उसको काबा के लिए वक़्फ़ कर देंगी। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो जीवित रहे और जवान हो गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम अतीक़ पड़ गया मानो कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो मोत से निजात दिए गए। ((الروض الانف فی تفسیر السيرة النبوية لابن هشام, भाग अव्वल, पृष्ठ 430 "इस्लाम अबी बकर" दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत संस्करण प्रथम)

उनके अतिरिक्त भी उपनाम अतीक़ की मुख़्तलिफ़ वजूहात मिलती हैं। कुछ लोगों के अनुसार आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अतीक़ इसलिए कहा जाता था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के गोत्र में कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसकी वजह से उस पर द्वेष लगाया जाता।

(अल् इस्तेयाब फ़ी मारफ़तिल असहाब भाग 3 पृष्ठ 963 अब्दुल्लाह बिन अबी कहाफ़ि, दारुल जलील बेरूत)

अतीक़ का एक अर्थ क़दीम या पुराने के भी हैं। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अतीक़ इस वजह से भी कहा जाता था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो क़दीम से नेकी और भलाई करने वाले थे।

(अलासाब फ़ी तमीईज़ अलसहाब, भाग 4 पृष्ठ 146 अब्दुल्लाह बिन उसमान, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, 2005 ई.)

इसी तरह इस्लाम क़बूल करने में और भलाई में पहल करने की वजह से आपका लक़्ब अतीक़ रखा गया था।

(عمدة القاری کتاب بدء الخلق باب مناقب المهاجرين و فضلهم, भाग 16 पृष्ठ 260 दारुल अहया अल् तुर्रास अल् अरबी, बेरूत, 2003)

और जो दूसरा लक़्ब है सिद्दीक़ उसकी वजह यह वर्णन की जाती है कि क्यों "सिद्दीक़" नाम रखा गया। अल्लामा जलालुद्दीन सीयूती लिखते हैं कि जहां तक सिद्दीक़ का विषय है तो कहा जाता है कि ज़माना-ए-जाहिलीयत में यह उपनाम आप

रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया गया था इस सच्चाई की वजह से जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो से ज़ाहिर होती रही। यह भी कहा जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हो को जो ख़बरें बताया करते थे उनके विषय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसदीक़ में जल्दी करने की वजह से आप रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम सिद्दीक़ पड़ गया। (तारीख़ अल् खुल्फ़ा जलालुद्दीन सीयूती, पृष्ठ 28-29 दारुल क़ुतुब अल् अरबी बेरूत 1999 ई.)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया कि जब रात के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बैतुल-मुक़द्दस मस्जिद अकसा की तरफ़ ले जाया गया अर्थात वाक़िया इस्रा जो हुआ था तो सुबह को लोग इस वाक़िया के विषय में बातें करने लगे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया और लोगों में से कुछ जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमपर ईमान लाए थे और उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसदीक़ भी की थी वह पीछे हट गए। कुछ कमज़ोर ईमान ऐसे भी थे। उस वक़्त मुशरिकीन में से कुछ लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास दौड़ते हुए आए और कहने लगे क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने साथी के बारे में कुछ मालूम है कि वह यह दावा कर रहे हैं कि उन्हें रात को बैतुल-मुक़द्दस ले जाया गया था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा क्या वाक़ई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया है? लोगों ने कहा हाँ उन्होंने कहा है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने यह फ़रमाया है तो निसंदेह सच्च कहा है। लोगों ने कहा क्या तुम उनकी तसदीक़ करते हो कि रात को बैतुल-मुक़द्दस गए और सुबह होने से पहले वापस भी आ गए? क्योंकि यह बैतुल-मुक़द्दस मक्का से तक़रीबन तेराह सौ किलो मीटर की दूरी पर है। तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि हाँ मैं इसकी भी तसदीक़ करूँगा जो इस से भी दूर है। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मैं सुबह शाम उतरने वाली आसमानी ख़बर के बारे में भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसदीक़ करता हूँ। इसलिए इस वजह से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम सिद्दीक़ पड़ गया, आप रज़ियल्लाहु अन्हो को सिद्दीक़ कहा जाने लगा।

((المستدرك على الصحيحين للحاكم كتاب معرفة الصحابة, भाग 3 पृष्ठ 81 हदीस 4458 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) (एटलस सीरत नब्वी, पृष्ठ 136)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो के आज़ाद करदा ग़ुलाम अबू वह्ब ने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस रात मुझे ले जाया गया अर्थात वाक़िया इस्रा में तो मैंने जिब्रील से कहा निसंदेह मेरी क़ौम मेरी तसदीक़ नहीं करेगी अर्थात मेरी बात को सच्च नहीं मानेगी तो जिब्रील ने कहा। يُصَدِّقُكَ اَبُوْبَكْرٍ وَهُوَ الصِّدِّيْقُ । अर्थात आप रज़ियल्लाहु अन्हो की तसदीक़ अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो करेंगे और वह सिद्दीक़ हैं। यह तबक़ात अलकुबरा में लिखा है।

(अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साद, भाग 3, पृष्ठ 127 "अबू बकर अल् सिद्दीक" दारुल क़ुतुब इल्मिया 1990 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत यह है कि जब इस्रा का वाक़िया हुआ तो लोग दौड़े दौड़े हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और उनसे कहा : क्या आपको मालूम है कि आपका दोस्त क्या कहता है? उन्होंने कहा क्या कहता है? उन्होंने उत्तर दिया कि वह कहता है कि मैं रात बैतुल-मुक़द्दस तक हो कर हूँ।'' हज़रत मुस्लेह मौउद रज़ियल्लाहु अन्हु लिख रहे हैं कि "यदि मेराज का वर्णन साथ ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया होता" अर्थात एक ही वक़्त में बताया होता या एक ही वाक़िया होता "तो कुफ़्फ़ार इस हिस्सा पर ज़्यादा शोर करते परन्तु उन्होंने केवल यह कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैं रात को बैतुल-मुक़द्दस तक गया था। फिर जब अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसदीक़ की तो लोगों ने कहा : क्या आप इस खिलाफ-ए-अक़ल बात को भी मान लेंगे? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मैं तो उसकी यह बात भी मान लेता हूँ कि सुबह शाम इस पर आसमान से कलाम उतरता है।" (तफ़सीर कबीर, भाग 4 पृष्ठ 286)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को सिद्दीक़ का ख़िताब दिया है तो अल्लाह ताआला ही बेहतर जानता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो मीं क्या-क्या कमालात थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ज़ीलत उस चीज़ की वजह से है जो उसके दिल के अंदर है और अगर ग़ौर से देखा जाए तो हक़ीक़त में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो सिदक़ दिखाया उसका उदाहरण मिलनी मुश्किल है और सच्च तो यह है कि हर ज़माना में जो व्यक्ति सिद्दीक़ के कमालात हासिल करने की इच्छा करे उसके लिए ज़रूरी है कि अबू बकर वाली विशेषताएं और स्वभाव को अपने अंदर पैदा करने के लिए जहां तक सम्भव हो मुजाहिदा करे और फिर जहाँ तक सम्भव हो दुआ से काम ले। जब तक अबू बकर वाली फ़ित्रत का साया अपने ऊपर डाल नहीं लेता और इसी रंग में रंगीन नहीं हो जाता सिद्दीक़ी कमालात हासिल नहीं हो सकते।"
(मलफ़ूज़ात भाग प्रथम पृष्ठ 372 से 373)

अतीक़ और सिद्दीक़ के अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अन्य उपनाम भी थे अर्थात जैसे خَلِيْفَةُ رَسُوْلِ الله हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को ख़लीफ़ रसूलुल्लाह भी कहा जाता था। इसलिए एक रिवायत में वर्णन है एक आदमी ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा हे अल्लाह के ख़लीफ़ा! तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया ख़ुदा का खालीफ़ा नहीं बल्कि ख़लीफ़ रसूलुल्लाह। अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़लीफ़ा हूँ और मैं इसी पर राज़ी हूँ।

(अल् तब्कातुल कुबरा साद, भाग 3 पृष्ठ 137 ذكر بيعة ابي بكر مطبوعه प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

सही बुख़ारी के शारेह अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी वर्णन करते हैं कि मुअर्रिख़ीन इत्यादि का इस बात पर इजमा है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ का उपनाम ख़लीफ़तुल रसूलुल्लाह था। (عمدة القارى كتاب بدء الخلق،باب مناقب المهاجرين و فضلهم भाग 16 पृष्ठ 260 दारुल अहया अल् तुर्रास अल् अरबी बेरूत 2003 ई.)

लेकिन ज़ाहिर है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह उपनाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद उनके ख़लीफ़ा होने की वजह से दिया गया था। इसलिए हम यह नहीं कह सकते आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने का यह लक़ब है। यह बाद की बात है। लोगों ने नाम रखा या आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ुद अपने लिए पसंद किया।

اَوَّاهٌ एक यह भी लक़ब है। اَوَّاهٌ का अर्थ है बहुत ही बुर्दबार और नर्म-दिल। तबक़ात कुबरा में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को उनकी नरमी और रहमत की वजह से اَوَّاهٌ का कहा जाता था।

(अल् तकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 127दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

اَوَّاهٌ مُّنِيْب का अर्थ है बहुत ही बुर्दबार, नर्म-दिल और झुकने वाला। तबक़ात-ए-कुबरा में है कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को सुना वह मिंबर पर कह रहे थे ग़ौर से सुनो। रावी ने कहा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को सुना वह मिंबर पर कह रहे थे कि ग़ौर से सुनो कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बहुत ही बुर्दबार, नर्म-दिल और झुकने वाले थे। ग़ौर से सुनो कि अल्लाह ताआला ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़ैर ख़्वाही अता की जिसके नतीजा में वह ख़ैर-ख़्वाह हो गए।

(अल् तब्कातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 127 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.)

اَمِيْرُ الشَّاكِرِيْن यह भी एक उपनाम कहा जाता है। اَمِيْرُ الشَّاكِرِيْن के अर्थ हैं शुक्र करने वालों का सरदार। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को कसरत-ए-शुक्र की वजह से اَمِيْرُ الشَّاكِرِيْن कहा जाता था। उमदतुल कारी में लिखा है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को اَمِيْرُ الشَّاكِرِيْن के उपनाम से पुकारा जाता था। (عمدة القارى كتاب بدء الخلق، باب مناقب المهاجرين و فضلهم, भाग 16 पृष्ठ 260 दारुल अहया अल् तुर्रास अल् अरबी बेरूत 2003 ई.)

ثَانِيَ اثْنَيْنِ यह भी एक उपनाम कहा जाता है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को अल्लाह ताआला ने ثَانِيَ اثْنَيْنِ के उपनाम से पुकारा है। अल्लाह ताआला का इरशाद है إِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ (अल् तौबा: 40) कि अगर तुम इस रसूल की मदद न भी करो तो अल्लाह ताआला पहले भी उसकी मदद कर चुका है जब उसे उन लोगों ने जिन्हों ने कुफ़्र क्या वतन से निकाल दिया था इस हाल में कि वह दौ में से एक था जब वे दोनों ग़ार में थे और वह अपने साथी से कह रहा था कि दु:ख न कर निसंदेह अल्लाह हमारे साथ है। अत: अल्लाह ने उस पर अपनी संतुष्टि नाज़िल की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं ' 'अल्लाह ने कष्टदायक समय और मुश्किल हालात में अपने नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की आप रज़ियल्लाहु अन्हो के माध्यम से तसल्ली फ़रमाई और अल् सिद्दीक़ के नाम और नबी सक़लैन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़ुरब से मख़सूस फ़रमाया और अल्लाह ताआला ने आपको ثَانِيَ اثْنَيْنِ। के वस्त्रों से लाभान्वित फ़रमाया और अपने विशेष बंदों में से बनाया क्या तुम्हें

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

किसी ऐसे व्यक्ति का इलम है जिसे ثَانِيَ اثْنَيْنِ के नाम से पुकारा गया और नबी दो-जहान के रफ़ीक़ का नाम दिया गया हो और इस फ़ज़ीलत में शरीक किया गया हो कि إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا और उसे दो सहयता याफताह में से एक क़रार दिया गया हो। क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो जिसकी क़ुरआन में इस तारीफ़ जैसी तारीफ़ की गई हो और जिसके मख़फ़ी हालात से संदेहात के हुजूम को दूर कर दिया गया हो और जिसके बारे में स्पष्ट तर्कों से न कि कल्पनाओं की बातों से यह साबित हो कि वह ख़ुदा के हुज़ूर स्वीकृत में से हैं। ख़ुदा की कसम इस किस्म का स्पष्ट वर्णन जो तहक़ीक़ से साबित शूदा हो जो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो से विशेष है मैंने रब-ए-बैत-ए-अतीक़ के पृष्ठों में किसी और व्यक्ति के लिए नहीं देखा। अत: यदि तुझे मेरी इस बात के विषय में संदेह हो या तुम्हारा यह गुमान हो कि मैंने हक़ से गुरेज़ किया है तो क़ुरआन से कोई नज़ीर पेश करो और हमें दिखाओ कि फुर्क़ान हमीद ने किसी और व्यक्ति के लिए ऐसी सराहत की हो अगर तुम सच्चों में से हो।" (सिर्रुल खिलाफ़ा उर्दू अनुवाद पृष्ठ60, 63 से 64) सिर्रुल खिलाफ़ा में आप अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया।

फिर एक नाम साहिबे रसूलभी है। इस का अर्थ है रसूल का साथी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि उन्होंने एक जमाअत से कहा तुम में से कौन सूर: तौबा पड़ेगा। एक व्यक्ति ने कहा मैं पढ़ता हूँ। फिर जब वह आयत إِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ कि जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न कर, यहां तक पहुंचा तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रो पड़े और फ़रमाया अल्लाह की क़सम! मैं ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का साथी था। (उद्धरित अज़ सीरतुल हल्बिया, भाग 2 पृष्ठ 56 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

फिर आदम-ए-सानी एक नाम है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह वह नाम है जो हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अता फ़रमाया है, आप ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को आदम-ए-सानी क़रार दिया है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक पत्र में वर्णन फ़रमाते हैं "अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो इस्लाम के आदम-ए-सानी हैं और ऐसा ही हज़रत उम्र फ़ारूक़ और हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह अन्हुमा अगर दीन में सच्चे अमीन न होते तो आज हमारे लिए मुश्किल था जो क़ुरआन शरीफ़ की किसी एक आयत को भी अल्लाह को ओर से होना बता सकते।''(मक्तूबते अहमद, भाग पृष्ठ 151 मकतूब नंबर 2 मकतूब बनाम हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब प्रकाशन राबव:)

सिर्रुल खिलाफ़ा में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं। अनुवाद इसका यह है कि "और ख़ुदा की कसम आप इस्लाम के लिए आदम-ए-सानी और ख़ैरुल इनाम (मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम) के अनवार के द्योतक अव्वल थे।'' (सिर्रुल खिलाफ़ा उर्दू अनुवाद, पृष्ठ 51 से 52)

फिर ख़लीलुल रसूल एक नाम है। सीरत की किताबों में ख़लीलुल रसूल भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम वर्णन किया गया है और इसकी बुनियाद कुतुब हदीस में मौजूद एक रिवायत है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर मैं किसी को मित्र बनाता तो अबू बकर को बनाता। इसलिए सही बुख़ारी में है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि मरज़ुल-मौत के दौरान आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर मैंने लोगों में से किसी को मित्र बनाना होता तो ज़रूर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ही ख़लील बनाता लेकिन इस्लाम की दोस्ती सबसे अफ़ज़ल है। इस मस्जिद में समस्त खिड़कियों को मेरी तरफ़ से बंद कर दो अतिरिक्ति अबू बकर की खिड़की के। (सही अल् बुखारी, كتاب الصلوٰة ،باب الخوخة والممر فى المسجد, हदीस नंबर 467)

हमारे रिसर्च सेल ने यहां यह प्रश्न उठाया है और प्रश्न उनका ठीक है कि इस रिवायत से केवल यह साबित होता है कि अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपना ख़लील किसी को बनाते तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बनाते लेकिन बनाया नहीं। इस बात की वज़ाहत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुद भी एक जगह फ़र्मा दी है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस कथन कि अगर मैं किसी को दुनिया में ख़लील बनाता तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बनाता की व्याख्या करते हुए फ़रमाया कि "यह जुमला भी व्याख्या के योग्य है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को आप दोस्त तो रखते थे। फिर उसका क्या अर्थ? बात असल में यह है कि ख़ुल्लत और दोस्ती तो वह होती है जो रग-ओ-रेशा में धँस जाए। वह तो केवल अल्लाह ताआला ही की विशेषता और उसके लिए विशेष है। दूसरों के साथ महिज़ उख़ुवत और रहम है। ख़ुल्लत का मफ़हूम ही यही है कि वह अंदर जाए'' अर्थात ख़ुल्लत की उच्च श्रेणी की जो पहचान है वह यह है। उच्च स्थान है "जैसे यूसुफ़ ज़ुलेख़ा के अंदर रच गया था। बस यही अर्थ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस पाक कथन के हैं कि अल्लाह ताआला की मुहब्बत में तो कोई शरीक नहीं। दुनिया में अगर किसी को दोस्त रखता तो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को रखता।" (मलफ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 277)

अल्लाह ताआला का तो एक स्थान है इस जैसा स्थान किसी को नहीं मिल सकता लेकिन बहरहाल जो दुनिया की दोस्ती है इस में अगर कोई दोस्ती है तो अबूबकर की। अर्थात दोस्ती तो थी लेकिन अल्लाह ताआला से दोस्ती के मुक़ाबले में नहीं कहा जा सकता था कि दोस्ती है। दुनिया के लोगों से अल्लाह ताआला जैसी दोस्ती करना एक नबी के लिए और विशेषता आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए तो सम्भव ही नहीं था यह हो ही नहीं सकता था। अगर कोई बात दुनिया-दारी के लिहाज़ से सम्भव थी तो फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस स्थान के सबसे ज़्यादा हक़दार अबू बकर हैं।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो का गोत्र क्या था? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का गोत्र "अबूबकर" था और इसकी एक से अधिक कारण वर्णन किए जाते हैं। कुछ के नज़दीक बकर जवान ऊंट को कहते हैं। चूँकि आपको ऊंटों की परवरिश और ग़ौर-ओ-पर्दाख़्त में बहुत दिलचस्पी और महारत थी इसलिए लोगों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अबू बकर कहना शुरू कर दिया। बकर का एक अर्थ जल्दी करना भी है। पहल करने के भी होते हैं। कुछ के कथन अनुसार यह गोत्र इसलिए पड़ा कि आप सबसे पहले इस्लाम लाए। إِنَّهٗ بَكَّرَ إِلَى الْإِسْلَامِ قَبْلَ غَيْرِهٖ उन्होंने दूसरों से पहले इस्लाम की तरफ़ पेशक़दमी की।

(उद्धरित अज़ अशरा मुबश्रा अज़ बशीर पृष्ठ 41 अलबदर पब्लिकेशन, 2000 ई.)

अल्लामा ज़मख़शरी ने लिखा है कि उनको पाकीज़ा विशेषताओं में इब पेश पेश होने की वजह से अबू बकर कहा जाता था। (सीरतुल हल्बिया, भाग अव्वल, पृष्ठ 390 बाब باب ذكر اول الناس ايمانا بهﷺ दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा आप के हुल्या के बारह में रिवायत करती हैं कि उन्होंने एक अरबी व्यक्ति को देखा जो पैदल चल रहा था और आप उस वक़्त अपने हौदज में थीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया : मैंने इस व्यक्ति से ज़्यादा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से समान कोई व्यक्ति नहीं देखा। रावी कहते हैं कि हमने कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमारे लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का हुल्या वर्णन करें तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो गोरे रंग के व्यक्ति थे। दुबले पुतले थे। गालों पर गोश्त कम था। कमर ज़रा ख़मीदा थी, ज़रा झुकी हुई थी कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का तेहबंद भी कमर पर नहीं रुकता था और नीचे फिसल जाता था। चेहरा कम गोश्त वाला था। आँखें अंदर की तरफ़ थीं और पेशानी बुलंद थी।(अल् तकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 140 "अबूबकर अल् सिद्दीक़" ومن بنى تيم بن مرّة بن كعب, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

सही बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो ग़रूर से अपना कपड़ा घसीट कर चले तो अल्लाह क़ियामत के दिन उसकी तरफ़ नज़र उठा कर नहीं देखेगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मेरे कपड़े की एक तरफ़ ढीली रहती है अर्थात एक साईड जो है वह ढीली रहती है और नीचे आ जाती है अतिरिक्ति ईसके कि मैं इस का ख़ास ख़्याल रखूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। आप तो ग़रूर से ऐसा नहीं करते।(सही अल् बुखारी किताब فضائل اصحاب النبى ﷺ باب قول النبى ﷺ لو كنت متخذا خليلا हदेस 3665) यह जायज़ है। कोई बात नहीं।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मेहंदी और कतम से ख़िज़ाब लगाया करते थे।

(सही मुस्लिम किताब अलफ़ज़ायल बाब الفضائل باب شَيبِهﷺ रिवायत नंबर 6073)

कतम, यह बूटी बुलंद पहाड़ों पर उगती है और वसमा के साथ मिला कर लगाई जाती है और इसके माध्यम से बालों को काली रंगत दी जाती थी। (लिसानुल अरब ज़ेरे माद्दा " 'कतम")

इस्लाम क़बूल करने से पहले हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पेशा और क़ुरैश में आप रज़ियल्लाहु अन्हो के स्थान के बारे में तारीख़ तिब्री में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी क़ौम में मक़बूल और प्रिय थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो नरम स्वभाव व्यक्ति थे। क़ुरैश के हसब-ओ-नसब और उसकी अच्छाई और बुराई को सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो व्यापर करने वाले व्यक्ति थे और

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

अच्छे अख़लाक़ और नेकियों के मालिक थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की क़ौम के लोग एक से ज़ायद बातों की वजह से आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आते और आप रज़ियल्लाहु अन्हो से मुहब्बत रखते थे। अर्थात आप रज़ियल्लाहु अन्हो के इलम की वजह से, आप रज़ियल्लाहु अन्हो के अनुभवों की वजह से और आप रज़ियल्लाहु अन्हो की अच्छी मजलिसों की वजह से। (तारीख़ तिब्री भाग 1 पृष्ठ 540-541 तारीख़ मा क़बल हिजरत दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

मुहम्मद हुसैन हैकल लिखते हैं कि क़ुरैश की सारी क़ौम व्यापर पेशा थी और उस का हर व्यक्ति इसी शुग़ल में व्यस्त था। इसलिए अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी बड़े हो कर कपड़े का व्यापर शुरू कर दिया जिसमें उन्होंने ग़ैरमामूली फ़रोग़ हासिल किया और उनका शुमार बहुत जल्द मक्का के निहायत सफ़ल व्यापारियों में होने लगा। व्यापर की सफ़लता में उनकी जाज़िब-ए-नज़र शख़्सियत और बेनज़ीर अख़लाक़ को भी बड़ा ख़ासा दख़ल था। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानी पत्ती, पृष्ठ 41 इलम-ओ-इर्फ़ान पब्लिशरज़ लाहौर 2004 ई.)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद के वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का धन चालीस हज़ार दिरहम था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस में से ग़ुलामों को आज़ाद करवाते और मुस्लमानों की ख़बर-गीरी करते रहे यहां तक कि जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त आपके पास पाँच हज़ार दिरहम बाक़ी थे।

(अल् आसाबा फ़ी तमीईज़ अलसहाबा, भाग 4 पृष्ठ 148 वर्णन अब्दुल्लाह बिन उसमान, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

इस्लाम से पूर्व के कुछ वाक़ियात हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी माली वुसअत और आला अख़लाक़ की वजह से क़ुरैश में उच्च स्थान के हामिल थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो क़ुरैश के सरदारों में से थे और उनके मश्वरों के केंद्र थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो सब से ज़्यादा पाकीज़ा और नेक लोगों में से थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो रईस, सम्मानित, सख़ी थे और बकसरत अपना माल ख़र्च किया करते थे। अपनी क़ौम में हर दिलअज़ीज़ और महबूब थे। अच्छी मजलिसों वाले थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ताबीर रोया में लोगों से ज़्यादा इलम रखने वाले थे अर्थात आप रज़ियल्लाहु अन्हो का इस बारे में बहुत इलम था। इलम ताबीर रोया के बहुत बड़े आलिम इब्ने सीरीयन कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इस उम्मत के सबसे बड़े ताबीर रोया के आलम थे और आप लोगों में सबसे ज़्यादा अहल-ए-अरब के हसब-ओ-नसब को जानने वाले थे।

जुबैर बिन मतअम जो कि इस फ़न, वंशज के ज्ञान में कमाल तक पहुंचे हुए थे उन्होंने कहा कि मैंने वंश का इलम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से सीखा है। विशेषता क़ुरैश का वंशज क्योंकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो क़ुरैश में से क़ुरैश के हसब-ओ-नसब और जो अच्छाईयां और बुराईयां उनके नसब में थीं उनका आप सबसे ज़्यादा इलम रखने वाले थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो की बुराईयों का वर्णन नहीं करते थे अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बुराईयों का वर्णन नहीं करते थे। इसी वजह से आप हज़रत अक़ील बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु की निसबत उनमें ज़्यादा प्रिय थे। हज़रत अकील रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद क़ुरैश के हसब-ओ-नसब और उनके आबा-ओ-अजदाद और उनकी अच्छाईयों और बुराईयों के बारे में सबसे ज़्यादा जानने वाले थे परन्तु हज़रत अकील रज़ियल्लाहु अन्हो क़ुरैश को नापसंदीदा थे क्योंकि वह क़ुरैश की बुराईयां भी गिनवा देते थे। हज़रत अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हो मस्जिद नब्वी में नसब नामों, अरब के हालात-ओ-वाक़ियात का इलम हासिल करने के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास बैठा करते थे।

अहल-ए-मक्का के नज़दीक हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उनके बेहतरीन लोगों में से थे इसलिए जब भी उन्हें कोई मुश्किल पेश आती वे आपसे मदद तलब कर लिया करते थे।

(अलहल्बिया, भाग 1 पृष्ठ 390 बाब اول الناس ایمانا بہﷺ दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

मक्का में बसने वाले समस्त क़बायल को काबा के मनासिब के लिहाज़ से कोई न कोई मन्सब हासिल होता था और कोई फ़रीज़ा तफ़वीज़ होता था। बनू अबद मुनाफ़ के सपुर्द हाजियों के लिए पानी की फ़राहमी और उन्हें ज़रूरी चीज़ें प्रदान करने का काम सौंपा गया था। बनू बनू अब्दुल दार के ज़िम्मा जंग के वक़्त अलमबर्दारी, काअबा की दरबानी और दारुल नदवा का इंतिज़ाम था। लश्करों की सिपहसालारी हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बीला बनू मख़्ज़ूम के हिस्सा में आई थी। ख़ून बहाना और दीयत इकट्ठा करना हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बीला बनू तीम बिन मर्वाह का काम था। जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो जवान हुए तो यह ख़िदमत उनके सपुर्द कर दी गई। (हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 59)

जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो किसी चीज़ की दियत का फ़ैसला करते तो क़ुरैश आप रज़ियल्लाहु अन्हो की तसदीक़ करते और आप रज़ियल्लाहु अन्हो की दियत का लिहाज़ करते और अगर आप रज़ियल्लाहु अन्हो के अतिरिक्त कोई और दियत का फ़ैसला करता तो क़ुरैश उसको छोड़ देते और इसकी तसदीक़ न करते थे। (ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल साहाबा 3 पृष्ठ 311 अब्दुल्लाह बिन उसमान, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, 2008 ई.)

हिलफुल फ़िज़ूल में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की भी शमूलियत थी। यह ग़रीबों की मदद का, मज़लूमों की मदद का वह विशेष मुआहिदा था जिसका "क़दीम ज़माना में अरब के कुछ शरीफ़ दिल व्यक्तियों को यह ख़्याल पैदा हुआ था कि आपस में मिलकर अह्द किया जाए कि हम हमेशा हक़दार को इस का हक़ हासिल करने में मदद देंगे और ज़ालिम को ज़ुलम से रोकेंगे और अरबी में चूँकि हक़ को फ़ज़ल भी कहते हैं जिसकी जमा फ़ुज़ूल है इस लिए इस मुआहिदा का नाम हिलफुल फ़िज़ूल रखा गया। कुछ रिवायतों की दृष्टि से चूँकि इस तजवीज़ के मुहर्रिक ऐसे व्यक्ति थे जिनके नामों में फ़ज़ल का शब्द आता था इस लिए यह अह्द हिलफुल फूज़ूल के नाम से प्रसिद्ध हो गया। बहरहाल हर्ब-ए-फुज्जर के बाद और ग़ालिबन इसी जंग से प्रभावित हो कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा ज़ुबैर बिन अब्दुल मुत्लिब के दिल में यह तहरीक पैदा हुई कि इस हलफ़ को फिर ताज़ा किया जाए। इसलिए उसकी तहरीक पर कुछ क़बायल क़ुरैश के नुमाइंदगान अब्दुल्लाह बिन जुदआन के मकान पर जमा हुए जहां अब्दुल्लाह बिन जुदआन की तरफ़ से एक दावत का इंतिज़ाम था और फिर सबने इत्तिफ़ाक़ करके बाहम क़सम खाई कि हम हमेशा ज़ुलम को रोकेंगे और मज़लूम की मदद करेंगे। इस अह्द में हिस्सा लेने वालों में बनू हाशिम, बनू मतलब, बनू असद, बनू ज़ुहरा और बनू तीम शामिल थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इस अवसर पर मौजूद थे और शरीक मुआहिदा थे। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दफ़ा नबुव्वत के ज़माना में फ़रमाते थे कि मैं अब्दुल्लाह बिन जुदआन के मकान पर एक ऐसी क़सम में शरीक हुआ था कि अगर आज इस्लाम के ज़माना में भी मुझे कोई उसकी तरफ़ बुलाए तो मैं इस पर लब्बैक कहूँगा।

(सीरत ख़ातमन नाबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, पृष्ठ 104-105)

एक मुसन्निफ़ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की भी हिलफुल फज़ूल में शमूलीयत का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि इस अंजुमन में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी शामिल हुए थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल हुए थे।

(सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो के शब-ओ-रोज़ अज़ मुहम्मद हुज़ैफ़ा पृष्ठ 19 प्रकाशन उल-हरमेन लाहौर)

बेसत से क़बल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आपका ताल्लुक़ और दोस्ती का हाल यूं वर्णन हुआ है। इब्ने इसहाक़ और उनके अतिरिक्त कुछ और लोगों ने वर्णन किया है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बेसत से पूर्व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी थे। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिदक़ और अमानत और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाक फ़ित्रत और उम्दा अख़लाक़ से अच्छी तरह अवगत थे। एक और रिवायत में वर्णन है कि ज़माना-ए-जाहिलीयत में भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोस्त थे।

(अल् बिदाया वन्न नहाया भाग 2 हिस्सा-3 बाब ذکر اول من اسلم ... पृष्ठ 29 ओ-32 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2001 ई.)

सैर अलसहाबा में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बचपन ही से उनको अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़ास प्रेम और लगाव था और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हलक़ा अहबाब में दाख़िल थे। अक्सर व्यापर के सिफ़रों में भी हम-राही का शरफ़ हासिल होता था।

(सैर अलसहाब, भाग अव्वल, हिस्सा पृष्ठ 56)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने बेअसत से क़बल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हलक़ा अहबाब का वर्णन करते हुए लिखा है कि

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

"बेअसत से पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोस्ताना ताल्लुक़ात का दायरा बहुत ही सीमित नज़र आता है। वास्तव में शुरू से ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तबीयत अलैहदगी पसंद थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्र के किसी हिस्सा में भी मक्का की आम सोसाइटी में ज़्यादा मेलजोल नहीं किया। जबकि कुछ ऐसे लोग भी थे जिनके साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोस्ताना ताल्लुक़ात थे। इन सब में विशेष हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अर्थात अब्दुल्लाह बिन अबी कहाफ़ा थे। जो क़ुरैश के एक आला ख़ानदान से ताल्लुक़ रखते थे और अपनी शराफ़त और क़ाबिलीयत की वजह से क़ौम में बड़ी इज़्ज़त की नज़र से देखे जाते थे। दूसरे दर्जा पर हकीम बिन हिज़ाम थे जो हज़रत ख़ुदीजा रज़ियल्लाहु अन्हो के भतीजे थे। यह निहायत शरीफ़ स्वभाव के आदमी थे। शुरू शुरू में यह इस्लाम नहीं लाए लेकिन इस हालत में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहुत मुहब्बत और इख़लास रखते थे। आख़िर सादत-ए-तिब्बी इस्लाम की तरफ़ खींच लाई। फिर ज़ैद बिन अम्र से भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ताल्लुक़ात थे। यह साहिब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के क़रीबी रिश्तेदार थे और उन लोगों में से थे जिन्हों ने ज़माना-ए-जाहिलियत में ही शिर्क तर्क कर रखा था और अपने आपको दीन-ए- इबराहीमी की तरफ़ मंसूब करते थे परन्तु यह इस्लाम के ज़माना से पहले ही फ़ौत हो गए।"

(सीरत ख़ातम नाबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, पृष्ठ 114)

बहरहाल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ताल्लुक़ात में नंबर एक पर थे। ज़माना-ए-जाहिलीयत से ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को शिर्क से नफ़रत थी और बचा करते थे।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़माना-ए-जाहिलियत में भी कभी शिर्क नहीं किया और न कभी किसी बुत को सजदा किया इसलिए सीरतुल हल्बिया में लिखा है कि वर्णन किया जाता है कि निसंदेह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कभी किसी बुत को सजदा नहीं किया था। अल्लामा इब्ने जोज़ी ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को उन लोगों में शुमार किया है जिन्हों ने जाहिलियत में ही बुतों की इबादत से इंकार कर दिया था अर्थात वो कभी बुतों के पास नहीं गए।

(सीरतुल हल्बिया, भग 1, पृष्ठ 384-385 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2002 ई.)

ज़माना-ए-जाहिलीयत में आप रज़ियल्लाहु अन्हो को शराब से नफ़रत थी। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़माना-ए-जाहिलियत में शराब को अपने ऊपर हराम किया हुआ था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने न जाहिलियत में और न ही इस्लाम में कभी शराब पी।

(कन्जुल अम्माल, भाग 12 पृष्ठ 490 मनाक़िब अबूबकर, हदीस 35609 मोअस्सा अर्रिसाला 1985 ई.)

एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के मजमा में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा गया कि क्या आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़माना-ए-जाहिलीयत में कभी शराब पी। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया : आऊज़ो बिल्लाह मैं अल्लाह की पनाह में आता हूँ। पूछा गया ईसकी क्या वजह है? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मैं अपनी इज़्ज़त को बचाता था और अपनी पाकीज़गी की हिफ़ाज़त करता था क्योंकि जो व्यक्ति शराब पीता है वह अपनी इज़्ज़त और पाकीज़गी को ज़ाए करता है। रावी कहते हैं कि जब यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया صَدَقَ اَبُوبَكْرٍ ۔ صَدَقَ اَبُوبَكْرٍ अर्थात अबू बकर ने सच्च कहा। अबू बकर ने सच्च कहा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो मर्तबा यह फ़रमाया। (तारीख़ अलख़लफ़ा पृष्ठ 30 फ़सल काना अबू बकर दारुल क़ुतुब अरबी बेरूत 1999 ई.)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बूल-ए-इस्लाम के बारे में मुख़्तलिफ़ जगहों पर रिवायात मिलती हैं। कुछ तफ़सीली हैं। कुछ संक्षेप में हैं। बहरहाल यह भी कुछ वर्णन कर देता हूँ। हज़रत आईशा रज़ी अल्लाह ताआला अन्हा वर्णन करती हैं कि जब से मैंने होश सँभाला है मेरे माँ बाप इसी दीन अर्थात इस्लाम पर थे और हम पर कोई ऐसा दिन नहीं गुज़रा कि जिस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे पास सुबह शाम दोनों वक़्त न आए हूँ।

सही बुख़ारी किताब हदीस नंबर 2297)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बूल-ए-इस्लाम के बारे में मुख़्तलिफ़ रवायात वर्णन

की जाती हैं। शरह् ज़र्कानी में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बूल-ए-इस्लाम का वाक़िया इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि एक दिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हकीम बिन हिज़ाम के घर में थे। उस वक़्त उनकी लौंडी आई और कहने लगी कि तेरी फूफी ख़दीजा यह वर्णन करती है कि इस का पति मूसा की मानिंद बतौर नबी भेजा गया है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो वहां से चुपके से निकले यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और इस्लाम क़बूल कर लिया।(शरह जरक़ानी अला मुवाहिब भाग 1 पृष्ठ 447-448 ذكر اول من آمن بالله و رسوله, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996)

सीरत इब्न-ए-हशाम की व्याख्या अर्रूज़तुल अन्फ में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की एक स्वप्न और इस्लाम लाने का वाक़िया इस प्रकार वर्णन हुआ है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेसत से क़बल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक स्वप्न देखा। उन्होंने देखा कि चांद मक्का में उतर आया है। फिर उन्होंने उसे देखा कि वह टुकड़े टुकड़े हो कर मक्का की समस्त जगहों और घरों में फैल गया है। इसका एक एक टुकड़ा हर घर में दाख़िल हो गया है और फिर गोया वह चांद आप रज़ियल्लाहु अन्हो की गोद में इकट्ठा कर दिया गया है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कुछ किताब वाले उल्मा से इस ख़ाब का वर्णन किया तो उन्होंने यह ताबीर बताई कि वह नबी जिसका इंतिज़ार किया जा रहा है उसका ज़माना आ गया है और आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस नबी की पैरवी करेंगे और इस वजह से लोगों में सबसे ज़्यादा आप रज़ियल्लाहु अन्हो सादत मंद होंगे। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को दावत-ए-इसलाम दी तो उन्होंने देरी न की। (الروض الانف فی تفسیر السیرة النبویة لابن هشام, भाग अव्वल, पृष्ठ431 "इस्लाम अबी बक्र" दारुल क़ुतुब आलमी बेरूत)

سُبُلُ الهدیٰ में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बूल इस्लाम के बारे में एक रिवायत यूं वर्णन हुई है कि काब वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के इस्लाम लाने का सबब आसमान से नाज़िल होने वाली एक वह्यी थी। इसकी तफ़सील यह है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो शाम में व्यापर की उद्देश्य से गए हुए थे। वहां आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक स्वप्न देखा और इस स्वप्न को बहीरा राहि से वर्णन किया। इस पर बहीरा राहिब ने पूछा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो कहां से हैं? आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मक्का से। उसने पूछा : मक्का के कौन से क़बीला से? आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया कि क़ुरैश से। उसने पूछा आप रज़ियल्लाहु अन्हो क्या करते हैं? आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया : ताजिर हूँ। इस पर बहीरा राहिब ने कहा कि अगर अल्लाह ताआला ने आपके स्वप्न को सच्च कर दिखाया तो तुम्हारी क़ौम में से एक नबी मबऊस किया जाएगा।

तुम उस नबी की ज़िंदगी में उसके वज़ीर होगे और उसकी वफ़ात के बाद उसके ख़लीफ़ा होगे।

फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे गुप्त रखा यहां तक कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मबऊस हो गए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप जो दावा करते हैं उसकी दलील क्या है? बाक़ी जगह तो कोई दलील नहीं कभी मांगी लेकिन बहरहाल इस रिवायत में यह है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह सवप्न जो तुमने शाम में देखा था वही दलील है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गले लगे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखों के मध्य बोसा लिया और कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। (सुबुलुल हुदा भाग 1 पृष्ठ 124 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लबनान 1993 ई.)

इस रिवायत में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के एक स्वप्न का वर्णन हुआ है लेकिन इसकी तफ़सीलात इस जगह दर्ज नहीं कि इस सवप्न में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने क्या देखा था जबकि सीरत-ए-हलबी्यह से मालूम होता है कि यह उसी रोया की तरफ़ इशारा है जिसमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखा कि चांद टुकड़े टुकड़े हो कर गिरा है जिसका पहले वर्णन गुज़र चुका है, पहले वर्णन हो चुका है। अब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस स्वप्न का वर्णन बहीरा राहिब के सामने किया था।(सीरत हल्बिया भाग 1, पृष्ठ 391, दारुल क़ुतुब इल्मिया 2001 ई.)

बहरहाल इस बारे में और अधिक रिवायतें भी सीरत लिखने वालों ने लिखी हैं वे इंशा अल्लाह आगे वर्णन होंगी

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं ने जिसे भी इस्लाम की तरफ़ बुलाया उसने ठोकर खाई और संकोच किया और इंतिज़ार करता रहा अतिरिक्ति अबू बकर के
मैं ने जब उनसे इस्लाम का वर्णन किया तो न वह इस से पीछे हटे और न उन्होंने उसके बारे में संकोच किया

"हर युग में जो व्यक्ति सिद्दीक़ के कमालात हासिल करने की इच्छा करे उसके लिए यह ज़रूरी है कि अबू बकर वाली विशेषताएं और फ़ित्रत को अपने अंदर पैदा करने के लिए जहां तक सम्भव हो मुजाहिदा करे और फिर जहाँ तक सम्भव हो दुआ से काम ले,जब तक अबू बकर वाली फ़ित्रत का साया अपने ऊपर डाल नहीं लेता और इसी रंग में रंगीन नहीं हो जाता सिद्दीक़ी कमालात हासिल नहीं हो सकते।" (हज़रत मसीह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताएं और गुण

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 दिसम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के इस्लाम स्वीकार करने के बारे में वर्णन हो रहा था। इस बारे में मज़ीद वर्णन भी है। कुछ बातें मुख़्तलिफ़ ज़ावियों से हैं इसलिए वर्णन हो जाती हैं परन्तु लगता यही है कि एक ही वाक़िया है। अब मैं कुछ वर्णन करूँगा। ओसोदुल ग़ाबा में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के इस्लाम स्वीकार करने की घटना का इस तरह वर्णन मिलता है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मबऊस होने से पहले एक मर्तबा यमन गया और क़बीला अज़्द के एक बूढ़े व्यक्ति के पास मेहमान ठहरा। यह व्यक्ति एक ज्ञानी था, कुतुब समाविया पढ़ा हुआ था और उसे लोगों के हसब-ओ-नसब के इलम में महारत हासिल थी। उसने जब मुझे देखा तो कहा मेरा ख़्याल है कि तुम हर्म के रहने वाले हो। मैंने कहा हाँ मैं अहल-ए-हर्म में से हूँ। फिर उसने कहा तुमको क़ुरैशी समझता हूँ। मैंने कहा हाँ मैं क़ुरैश में से हूँ। फिर उसने कहा मैं तुमको तेमी समझता हूँ। मैंने कहा हाँ मैं तीम बिन मुर्रह में से हूँ। मैं अब्दुल्लाह बिन उसमान हूँ और काब बिन साद बिन तीम बिन मुर्रह की औलाद से हूँ। उसने कहा कि मेरे लिए तुम्हारे विषय में अब केवल एक बात रह गई है। यहां यह जो अब्दुल्लाह बिन उसमान नाम बताना है, मेरा ख़्याल है कि इस वक़्त तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अभी उनका नाम अब्दुल्लाह नहीं रखा था लेकिन यह रिवायत है। बहरहाल उसने कहा कि मेरे लिए तुम्हारे विषय में अब केवल एक बात बाक़ी रह गई है। मैंने कहा वह क्या है? उसने कहा तुम अपने पेट से कपड़ा हटा कर दिखाओ। मैंने कहा मैं ऐसा नहीं करूँगा या तुम मुझे बताओ तुम ऐसा क्यों चाहते हो। उसने कहा कि मैं सही और सच्चे इलम में पाता हूँ कि एक नबी हर्म में मबऊस होंगे। एक जवान और एक बड़ी उम्र वाला व्यक्ति उनके काम में उनकी मदद करेंगे। जहां तक नौजवान का ताल्लुक़ है तो वह मुश्किलात में कूद जाने वाला और परेशानियों को रोकने वाला होगा और बड़ी उम्र वाला सफ़ैद और पतले जिस्म वाला होगा उसके पेट पर तिल होगा और इसकी बाएं रान पर एक निशानी होगी। उसने कहा तुम्हारे लिए ज़रूरी नहीं है कि तुम मुझे वह दिखाओ जो मैंने तुमसे मुतालिबा किया है तुम में मौजूद बाक़ी समस्त विशेषता मेरे लिए पूरी हो चुकी हैं अतिरिक्ति इसके जो मुझ पर गुप्त है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया : अत: मैंने उसके लिए अपने पेट से कपड़ा हटाया तो उसने मेरी नाफ़ के ऊपर स्याह तिल देखा तो कहने लगा कि काअबा के रब की क़सम वह तुम ही हो! मैं तुम्हारे सामने एक मुआमला पेश करने वाला हूँ। अत: तुम उसके विषय में सावधान रहना। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा वह क्या है? उसने कहा कि ख़बरदार हिदायत से इन्हिराफ़ न करना और इस बेहतरीन रास्ते को मज़बूती से थामे रखना और ख़ुदा जो तुम्हें माल और दौलत दे उसके विषय में ख़ुदा से डरते रहना। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने यमन में अपना काम पूरा किया और फिर उस बूढ़े व्यक्ति को अल-विदा कहने के लिए उसके पास आया तो उसने कहा क्या तुम मेरे इन अशआर को याद करोगे जो मैंने इस नबी की शान में कहे हैं? मैंने कहा हाँ तो उसने चंद अशआर सुनाए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि फिर मैं मक्का आया तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मबऊस हो चुके थे। फिर उक़बा बिन अबी मुईत, शेबा , रबीया, अबूजहल, अबू बख्तरी और क़ुरैश के अन्य सरदार मेरे पास आ गए। मैंने उनसे कहा क्या तुम पर कोई मुसीबत आ गई या कोई वाक़िया हो गया है जो इकट्ठे हो के आ गए हो। उन्होंने कहा कि अबू बकर! बहुत बड़ा वाक़िया हो गया है। अबू तालिब का यतीम दावा करता है कि वह नबी है। अगर आप न होते तो हम उसके विषय में कुछ इंतिज़ार न करते। अब जबकि आप आ चुके हैं तो अब इस मुआमले के लिए आप ही हमारा उद्देश्य हैं और हमारे लिए काफ़ी हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैंने उन्हें अच्छे अंदाज़ से टाल दिया और मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में पूछा तो बताया गया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़दीजह रज़ियल्लाहु अन्हा के मकान में हैं । मैंने जा कर दरवाज़े पर दस्तक दी। इसलिए वह बाहर तशरीफ़ लाए। अत:मैंने कहा हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपने ख़ानदानी घर से उठ गए हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने बाप दादा का दीन छोड़ दिया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बकर! मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी तरफ़ भी और तुम समस्त लोगों की तरफ़ भी। अत: तुम अल्लाह पर ईमान ले आओ। मैंने कहा इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क्या तर्क है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह बूढ़ा व्यक्ति जिससे तुमने यमन में मुलाक़ात की थी। मैंने कहा कि यमन में तो बहुत से बूढ़े व्यक्ति थे जिनसे मैंने मुलाक़ात की है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह बूढ़ा व्यक्ति जिसने तुम्हें अशआर सुनाए थे। मैंने अर्ज़ किया कि हे हबीब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किस ने यह ख़बर वर्णन की? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस महान फ़रिश्ते ने जो मुझसे पहले नबियों के पास भी आता था। मैंने अर्ज़ किया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपना हाथ बढ़ाईं मैं शहादत देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते थे कि फिर मैं लौटा और मेरे इस्लाम लाने की वजह से मक्का के दो पहाड़ों के मध्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा ख़ुश कोई और न हुआ।

(ओसोदुल ग़ाबा फ़ी अलसहाबा भाग 3 पृष्ठ 313-312 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

ओसोदुल ग़ाबा का यह हवाला है। हो सकता है कि कुछ जगह कुछ बढ़ा भी लेते हैं दास्तान के लिए लेकिन बहुत सारी बातें सही भी होंगी।

رِيَاضُ النَّضِرَة में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बूल-ए-इस्लाम का वाक़िया इस तरह दर्ज है। उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गहरे और मुख़लिस दोस्त थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मबऊस हुए तो क़ुरैश के लोग हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और कहा कि हे अबू बकर! तुम्हारा यह साथी दीवाना हो गया है (नऊज़ो बिल्लाह)। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि इस को क्या मुआमला है? तो उन्होंने कहा कि वह मस्जिद हराम में लोगों को तौहीद अर्थात ख़ुदाए वाहिद की तरफ़ बुलाता है और वह कहता है कि वह नबी है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि यह बात उन्होंने कही है? लोगों ने कहा हाँ और वह यह बात मस्जिद हराम में कह रहे हैं। इसलिए हज़रत अबू बकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर दस्तक दी, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बाहर बुलाया। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमआन के सामने आए

तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि हे अबु-क़ासिम! मुझे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में क्या बात पहुंची है? आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर! तुम्हें मेरे विषय में क्या बात पहुंची है? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मुझे यह बात पहुंची है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमअल्लाह की तौहीद की तरफ़ बुलाते हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ अबू बकर! निसंदेह मेरे रब ने मुझे बशीर और नज़ीर बनाया है और मुझे इब्राहीम की दुआ बनाया है और मुझे समस्त इन्सानों की तरफ़ मबऊस किया है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा। अल्लाह की क़सम मैं ने कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झूठ बोलते नहीं देखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निसंदेह अपनी अमानत की अज़मत, सिला रहमी और अच्छे कर्मों की वजह से नबुव्वत के ज़्यादा हक़दार हैं। अपना हाथ बढ़ाएं ताकि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत करूँ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ बढ़ाया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसदीक़ की और इक़रार किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो लेकर आए हैं वह हक़ है। अत: अल्लाह की क़सम! हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कोई तवक़्क़ुफ़ और तरद्दुद न किया जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को इस्लाम की तरफ़ बुलाया। (रियाज़ु नज़र भाग 1 पृष्ठ 84-85 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2014 ई.)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैंने जिसे भी इस्लाम की तरफ़ बुलाया उसने ठोकर खाई और संकोच किया और इंतिज़ार करता रहा अतिरिक्ति अबू बकर के। मैंने जब उनसे इस्लाम का वर्णन किया तो न वह इस से पीछे हटे और न उन्होंने इसके बारे में संकोच किया।

(ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारफ़तिल अलसहाबा, भाग 3 पृष्ठ 205 से 206 अब्दुल्लाह बिन उसमान, दारुल फ़िक़र बेरूत, 2003 ई.)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे लोगो अल्लाह ने मुझे तुम्हारी तरफ़ मबऊस किया और तुमने कहा तू झूठा है और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा सच्चा है। और उन्होंने अपनी जान-ओ-माल से मेरे साथ हमदर्दी का इज़हार किया। (सही अल् बुखारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाब उन्नबी (स.) हदीस 3661) यह बुख़ारी की रिवायत है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के इस्लाम स्वीकार करने का वाक़िया वर्णन करते हुए एक जगह इस तरह वर्णन करते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब दावा-ए-नुबूव्वत फ़रमाया तो उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कहीं बाहर गए हुए थे। वापिस तशरीफ़ लाए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो की एक लौंडी ने आपसे कहा कि आप का दोस्त (नऊज़ो बिल्लाह) पागल हो गया है और वह अजीब अजीब बातें करता है। कहता है कि मुझ पर आसमान से फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उसी वक़्त उठे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकान पर पहुंच कर आपके दरवाज़े पर दस्तक दी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि मैं आपसे केवल एक बात पूछने आया हूँ। क्या आपने यह कहा है कि ख़ुदा के फ़रिश्ते मुझ पर नाज़िल होते हैं और मुझसे बातें करते हैं? रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस ख़्याल से कि ऐसा न हो कि उनको ठोकर लग जाए व्याख्या चाही।'' हमारे हाँ तारीख़ में उमूमन यही रिवायत चलती है। "परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व्याख्या न करें और मुझे केवल इतना बताएं कि क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने यह बात कही है? रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर उस ख़्याल से कि मालूम नहीं य अह प्रश्न करें कि फ़रिश्तों की शक्ल कैसी होती है और वे किस तरह नाज़िल होते हैं? पहले कुछ तमहीदी तौर पर बात करनी चाही परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फिर कहा कि नहीं! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल यह बताएं कि क्या यह बात दरुस्त है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ दरुस्त है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाता हूँ। और फिर उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मैंने दलायल वर्णन करने से केवल इस लिए रोका था कि मैं चाहता था कि मेरा ईमान मुशाहिदे पर हो। दलायल पर इसकी बुनियाद न हो क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सादिक़ और रास्तबाज़ तस्लीम करने के बाद किसी तर्क की ज़रूरत ही नहीं रहती। ग़रज़ जिस बात को मक्का वालों ने छुपाया था उसे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने अमल से स्पष्ट करके दिखा दिया।"

(तफ़सीर कबीर, भाग 2 पृष्ठ 251-252)

हज़रत मुस्लेह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक और जगह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के इस्लाम स्वीकार करने का वाक़िया इस तरह वर्णन किया है और क्योंकि वज़ाहत कर रहे हैं इसलिए किसी और हवाले से इस में इस तरह वर्णन है कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का ईमान लाना अजीबतर था। जिस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह्यी हुई" अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह्यी हुई कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नबुव्वत का दावा करें। उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मक्का के एक रईस के घर में बैठे थे। उस रईस की लौंडी आई और उसने आकर वर्णन किया कि ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को मालूम नहीं कि क्या हो गया है। वह कहती हैं कि मेरे पति इसी तरह नबी हैं जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम थे। लोग इस ख़बर पर हँसने लगे और इस किस्म की बातें करने वालों को पागल क़रार देने लगे परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हालात से बहुत गहिरी वाक़फ़ीयत रखते थे उसी वक़्त उठकर हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर आए और पूछा कि क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई दावा किया है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया हाँ अल्लाह ताआला ने मुझे दुनिया की इस्लाह के लिए मबऊस किया है और शिर्क के मिटाने का हुक्म दिया है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बग़ैर इसके कि कोई और प्रश्न करते उत्तर दिया कि मुझे अपने बाप की और माँ की क़सम कि तू ने कभी झूठ नहीं बोला और मैं नहीं मान सकता कि तू ख़ुदा पर झूठ बोलेगा। अत: मैं ईमान लाता हूँ कि ख़ुदा के सिवा और कोई माबूद नहीं और यह कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खुदा ताआला की तरफ़ से रसूल हैं। इसके बाद अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ऐसे नौजवानों को जमा करके जो उन की नेकी और तक़्वा के क़ायल थे' अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की नेकी और तक़्वा के क़ायल थे उन्हें "समझाना शुरू किया और सात आदमी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए। ये सब नौजवान थे जिनकी आयु 12 वर्ष से लेकर 25 वर्ष तक थी।"

(दौरा यूरोप, अनवारुल उलूम, भाग 8 पृष्ठ 543-544)

फिर एक जगह हज़रत मुस्लेह मसीह मौऊद ने इस वाक़िया को यूं वर्णन फ़रमाया है कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक ही तर्क से माना है और फिर कभी उनके दिल में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में एक लम्हा के लिए भी संदेह पैदा नहीं हुआ।" तर्क वही चल रही है। वाक़ियात कुछ दफ़ा ज़रा मुख़्तलिफ़ हो जाते हैं "और वह तर्क यह थी कि उन्होंने रसूलर करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बचपन से देखा और वह जानते थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी झूठ नहीं बोला। कभी शरारत नहीं की। कभी गंदी और नापाक बात आपके मुँह से नहीं निकालीं। बस यही वह जानते थे। इस से ज़्यादा न वह किसी शरीयत के जानने वाले थे कि उसके बताए हुए मयार से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सच्चा समझ लिया। न किसी क़ानून के पैरौ थे। उन्हें कुछ मालूम न था कि ख़ुदा का रसूल क्या होता है और उसकी सच्चाई के क्या प्रमाण होते हैं। वह केवल यह जानते थे कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने झूठ कभी नहीं बोला। वह एक सफ़र पर गए हुए थे जब वापिस आए तो रास्ता में ही किसी ने उन्हें कहा तुम्हारा दोस्त (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) कहता है कि मैं ख़ुदा का रसूल हूँ। उन्होंने कहा कि क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) यह कहता है? उसने कहा हाँ। उन्होंने कहा फिर वह झूठ नहीं बोलता। जो कुछ कहता है सच्च कहता है। क्योंकि जब उसने कभी बंदों पर झूठ नहीं बोला तो ख़ुदा पर क्यों झूठ बोलने लगा।

जब उसने इन्सानों से कभी ज़रा बददियानती नहीं की तो अब उनसे इतनी बड़ी बददियानती किस तरह करने लगा कि उनकी रूहों को तबाह कर दे। केवल यह तर्क थी जिसकी वजह से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को माना और उसी को ख़ुदा ताआला ने भी लिया है। इसलिए फ़रमाता है लोगों को कह दो فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (यूनुस: 17) में एक अरसा तुम में रहा उस को देखो उस में मैंने तुमसे कभी ग़द्दारी नहीं की फिर अब मैं ख़ुदा से क्यों ग़द्दारी करने लगा। यही वह तर्क था जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो लिया और कह दिया कि अगर वह कहता है कि ख़ुदा का रसूल हूँ तो सच्चा है और मैं मानता हूँ। इसके बाद न कभी उनके दिल में कोई संदेह पैदा हुआ और न उनके मज़बूत ईमान में कभी लग़्ज़िश आई। इन पर बड़े बड़े इबतिला आए। उन्हें जायदादें और वतन छोड़ना और अपने अज़ीज़ों को क़तल करना पड़ा परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम की सदाक़त में कभी संदेह न हुआ।''(बैअत करने वालों के लिए हिदायात, अनवारुल उलूम भाग 6 पृष्ठ 76-77)

एक दफ़ा बैअत करने वालों को हिदायात दे रहे थे, उनको समझा रहे थे तो इस ज़िमन में यह बात आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानने का वाक़िया वर्णन करते हुए फ़रमाया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को सिद्दीक़ का ख़िताब दिया है तो अल्लाह ताआला ही बेहतर जानता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो में क्या-क्या कमालात थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की फ़ज़ीलत उस चीज़ की वजह से है जो उसके दिल के अंदर है और अगर ग़ौर से देखा जाए तो हक़ीक़त में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो सिदक़

दिखाया उसकी नज़ीर मिलनी मुश्किल है और सच्च तो यह है कि हर ज़माना में जो व्यक्ति सिद्‌दीक़ के कमालात हासिल करने की इच्छा करे उसके लिए यह ज़रूरी है कि अबू बकर वाली विशेषताएं और फ़ित्रत को अपने अंदर पैदा करने के लिए जहां तक सम्भव हो मुजाहिदा करे और फिर जहाँ तक सम्भव हो दुआ से काम ले। जब तक अबू बकर वाली फ़ित्रत का साया अपने ऊपर डाल नहीं लेता और उसी रंग में रंगीन नहीं हो जाता सिद्‌दीक़ी कमालात हासिल नहीं सकते।''

फिर फ़रमाया कि "अबू बकर वाली फ़ित्रत क्या है? इस पर मुफ़स्सिल बेहस और कलाम का यह अवसर नहीं क्योंकि इसके तफ़सीली वर्णन के लिए बहुत वक़्त की ज़रूरत है।" फ़रमाया कि "मैं संक्षेप में एक वाक़िया वर्णन कर देता हूँ और वह यह है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबुव्वत का इज़हार फ़रमाया। उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो शाम की तरफ़ सौदागरी करने के लिए गए हुए थे। जब वापस आए तो अभी रास्ते ही में थे कि एक व्यक्ति आप रज़ियल्लाहु अन्हो से मिला। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस से मक्के के हालात दरयाफ़्त फ़रमाए और पूछा कि कोई ताज़ा ख़बर सुनाओ। जैसा कि क़ायदे की बात है कि जब इन्सान सफ़र से वापिस आता है तो रास्ते में अगर कोई अहल-ए-वतन मिल जाए। तो उससे अपने वतन के हालात दरयाफ़्त करता है। उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि नई बात यह है कि दोस्त मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पैग़ंबरी का दावा किया है। हज़रत अबूबकर ने यह सुनते ही फ़रमाया कि अगर उसने यह दावा किया है तो निसंदेह वह सच्चा है।

इसी एक वाक़िया से मालूम हो सकता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो को किस क़दर हुस्ने ज़न था। चमत्कार की भी ज़रूरत नहीं समझी और हक़ीक़त भी यही है कि चमत्कार वह व्यक्ति मांगता है जो दावा करने वाले के हालात से अनजान हो और जहां ग़ैरियत हो और मज़ीद तसल्ली की ज़रूरत हो लेकिन जिस व्यक्ति को हालात से पूरी वाक़फ़ीयत हो तो उसे चमत्कार की ज़रूरत ही क्या है। उद्देश्य हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रास्ते में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दावा-ए-नुबूव्वत सुनकर ईमान ले आए। फिर जब मक्के में पहुंचे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत-ए- मुबारक में हाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबुव्वत का दावा किया है? आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ यह दरुस्त है। इस पर हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गवाह रहें कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पहला मुसद्‌दिक़ हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का ऐसा कहना केवल कथन ही कथन न था बल्कि आप ने'' अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने "अपने कर्म से उसे साबित कर दिखाया और मरते दम तक उसे निभाया और बाद मरने के भी साथ न छोड़ा।" (मलफ़ूज़ात, भाग अव्वल, पृष्ठ 372 से 374)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सूर: रहमान की आयत وَلِمَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتَانِ (रहमान: 47)और जो भी अपने रब के स्थान से डरता है उसके लिए दो जन्नतें हैं وَلِمَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتَانِ जो अपने रब के स्थान से डरता है उसके लिए दो जन्नतें हैं। इसकी तफ़सीर वर्णन करते हुए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की उदाहरण देते हैं और फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबू बकर सिद्‌दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को देखो कि जब वह शाम के मुल्क से वापस आ रहे थे तो रास्ते में एक व्यक्ति उनको मिला। आपने उस से पूछा कि कोई ताज़ा ख़बर सुनाओ। उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि और तो कोई ताज़ा ख़बर नहीं जबकि तुम्हारे दोस्त मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम) ने पैग़ंबरी का दावा किया है। इस पर अबू बकर सिद्‌दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसको उत्तर दिया कि अगर उसने नबुव्वत का दावा किया है तो वह सच्चा है। वह झूठा कभी नहीं हो सकता। इसके बाद हज़रत अबू बकर सिद्‌दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो सीधे हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकान पर चले गए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित करके कहने लगे कि आप गवाह रहें कि सबसे पहले आप पर ईमान लाने वाला मैं हूँ। देखो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई मोजिज़ा नहीं मांगा था। केवल पहले तआरुफ़ की बरकत से ही वह ईमान ले आए थे। याद रखों मोजज़ात वह तलब किया करते हैं जिनका परिचय नहीं होता।

जो लँगोटिया यार होता है उसके लिए तो साबिक़ा हालात ही मोजिज़ा होते हैं उसके बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बड़ी बड़ी तकालीफ़ का सामना हुआ। तरह तरह के मसायब और सख़्त दर्जे के दुख उठाने पड़े लेकिन देखो अगर सबसे ज़्यादा उन्हीं को दुख दिया गया था और वही सबसे बढ़कर सताए गए थे तो सबसे पहले तख़्त-ए-नबुव्वत पर वही बिठाए थे।'' अल्लाह ताआला ने यहां भी उनको इनाम से नवाज़ दिया और अगले जहान में तो है ही जन्नत। "कहाँ वह व्यापर के सारा दिन धक्के खाते फिरते थे और कहाँ यह दर्जा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सबसे अव्वल ख़लीफ़ा उन्हीं को निर्धारित किया गया।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 78-79)

फिर एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "आदमी दो किस्म के होते हैं एक तो वह पवित्र स्वभाव के होते हैं जो पहले ही मान लेते हैं। ये लोग बड़े ही दूर-अँदेश और बारीक नज़र वाले होते हैं जैसे हज़रत अबू बकर सिद्‌दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो थे और एक बेवक़ूफ़ होते हैं जब सिर पर आ पड़ती हैं तब कुछ चौंकते हैं।" (मलफ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 261) अर्थात जब किसी मुश्किल में गिरफ़्तार होते हैं, अज़ाब आता है तब सोचते हैं कि मानना चाहिए कि नहीं।

इस बारे में भी बेहस होती है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सबसे पहले कौन ईमान लाया?

मुअर्रिख़ीन के नज़दीक इस बात में मतभेद पाया जाता है कि मर्दों में से सबसे पहले कौन ईमान लाया था हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो या हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो या हज़रत ज़ैद बिन हरिस रज़ियल्लाहु अन्हो।

(سُبُلُ الهُدٰی و الرشاد भाग 2 पृष्ठ 300-304 الباب الثانی فی اسلام خدیجه و علی و زید و ابی بکر... दारुल क़ुतुब इल्मिया 1993 ई.)(तारीख़ अलतिबरी, भाग 1 तारीख़ ما قبل الهجرة, पृष्ठ 537 ता 540 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

कुछ उसका यह हल निकालते हैं कि बच्चों में से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और बड़ों में से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और ग़ुलामों में से हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो सबसे पहले ईमान लाए थे। इसलिए अल्लामा अहमद बिन अब्दुल्लाह इन रवायात में समानत करते हुए लिखते हैं कि सबसे पहले हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा पुत्री ख़ुवेलद ने इस्लाम क़बूल किया और मर्दों में सबसे पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस्लाम क़बूल किया जबकि वह अभी बच्चे थे जैसा कि उनकी उम्र के बारे में पहले वर्णन हो चुका है कि उनकी उम्र दस वर्ष थी। वह अपना इस्लाम मख़्फ़ी रखे हुए थे और पहले बालिग़ अरबी व्यक्ति जिसने इस्लाम क़बूल किया और अपने इस्लाम का इज़हार किया वह हज़रत अबू बकर बिन अबू कहाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो थे और आज़ाद करदा ग़ुलामों में से जिसने सबसे पहले इस्लाम क़बूल किया वह हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो बिन हारिसा थे। यह सब की सहमती से बात है जिसमें कोई मतभेद नहीं।

(अर्रयाज़ अन्नज़रत फी मनाक़िब अल्अशरत ,भाग 1 पृष्ठ 89 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2014 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस बेहस का वर्णन करते हुए जो फ़रमाया है वह इस तरह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अपने मिशन की तब्लीग़ शुरू की तो सबसे पहले ईमान लाने वाली हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं जिन्हों ने एक लम्हे के लिए भी देरी नहीं की। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाद मर्दों में सबसे पहले ईमान लाने वाले के विषय में मौरख़ीन में मतभेद है। कुछ हज़रत अबू बकर अब्दुल्लाह बिन अबी क़हाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम लेते हैं। कुछ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो का या ज़ैद बिन हारसह रज़ियल्लाहु अन्हो का लेकिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि हमारे नज़दीक यह झगड़ा व्यर्थ है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और ज़ैद बिन हारसह रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के आदमी थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बच्चों की तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमाना था और उनका ईमान लाना था। जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस बात को वे बच्चों की हैसियत से मानते थे और हो सकता है कि उस वक़्त यह बात भी उन्होंने इस तरह ही मानी हो। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि इन दोनों बच्चों को निकाल दो तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मुस्लिमा तौर पर मुक़द्‌दम और साबिक़ ईमान वाले थे। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरबारी शायर हस्सान बिन साबित अनुसारी रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में कहते हैं कि

اِذَا تَذَكَّرۡتَ شَجۡوًا مِنۡ اَخِیۡ ثِقَةٍ — فَاذۡكُرۡ اَخَاكَ اَبَابَكۡرٍ بِمَا فَعَلَا
خَیۡرَ الۡبَرِیَّةِ اَتۡقَاهَا وَ اَعۡدَلَهَا — بَعۡدَ النَّبِیِّ وَ اَوۡفَاهَا بِمَا حَمَلَا
اَلثَّانِیَ التَّالِیَ الۡمَحۡمُوۡدَ مَشۡهَدُهٗ — وَاَوَّلَ النَّاسِ مِنۡهُمۡ صَدَّقَ الرُّسُلَا

अर्थात जब तुम्हारे दिल में कभी कोई दर्द आमेज़ याद तुम्हारे किसी अच्छे भाई के विषय में पैदा हो तो उस वक़्त अपने भाई अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी याद कर लिया करो। उसकी इन ख़ूबीयों की वजह से जो याद रखने के काबिल हैं। वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सब लोगों में से ज़्यादा मुत्तक़ी और सबसे ज़्यादा मुंसिफ़ मिज़ाज था और सबसे ज़्यादा अपनी उन ज़िम्मेदारीयों को पूरा करने वाला था जो उसने उठाई। हाँ अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो वही तो है जो सौर की गार में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ दूसरा व्यक्ति था जिसने अपने आपको आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इत्तबाअ में बिल्कुल लुप्त कर रखा था और वह जिस काम में भी हाथ डालता था उसे ख़ूबसूरत बना देता था और वह उन सब लोगों में से पहला था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी शराफ़त और क़ाबिलीयत की वजह से क़ुरैश में बहुत सम्मानित थे और इस्लाम में तो उन को वह स्थान हासिल हुआ जो किसी और सहाबी को हासिल नहीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक लम्हे के लिए भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावा में संदेह नहीं किया बल्कि सुनते ही क़बूल किया और फिर उन्होंने अपनी सारी तवज्जा और अपनी जान और माल को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लाए हुए दीन की ख़िदमत में वक़्फ़ कर दिया।

शेष पृष्ठ 12 पर

पृष्ठ 11 का शेष

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा में अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पहले ख़लीफ़ा हुए। अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में भी उन्होंने बेनज़ीर क़ाबिलीयत का सबूत दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में यूरोप का प्रसिद्ध स्प्रिंगर (sprenger) लिखता है कि अबू बकर का आग़ाज़-ए-इस्लाम में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाना इस बात की सबसे बड़ा तर्क है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) चाहे धोखा खाने वाले हों परन्तु धोखा देने वाले हरगिज़ नहीं थे बल्कि सिदक़-ए-दिल से अपने आपको ख़ुदा का रसूल यक़ीन करते थे। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि सर विलियम मीयूर को भी स्प्रिंगर की इस राय से इत्तिफ़ाक़ है।

(उद्धरित अज़ सीरत ख़ातम नाबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम,पृष्ठ 121-122)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को तब्लीग़-ए-इस्लाम और इसके नतीजे में किन आज़माईशों से गुज़रना पड़ा।

इसके बारे में ओसोदुल ग़ाबा में लिखा है कि जब इस्लाम आया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सबसे पहले इस्लाम क़बूल किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर एक जमाअत ने इस्लाम क़बूल किया इस मुहब्बत की वजह से जो उन लोगों को आप रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से थी और इस लगाव की वजह से जो उन्हें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ था यहां तक कि अशरा मुबशरा में से पाँच सहाबा ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर इस्लाम क़बूल किया।

(उद्धरित ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 205 अब्दुल्लाह बिन उसमान, दारुल फ़िक़्र बेरूत, 2003 ई.)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की तब्लीग़ से इस्लाम लाने वालों में हज़रत उसमान बिन उफान, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत साद बिन अबी विक़ास, हज़रत तल्हा बिन अबैदुल्लाह शामिल थे।

(सीरत इब्ने हिशाम भाग 1 पृष्ठ 166 ज़िक्र मन अस्लम मिनस्सहाबत बे दअवते अबी बकर दारुल किताब अल् अरबी बेरूत, 2008 ई.)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी किताब सीरत ख़ातिम नाबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में लिखते हैं कि "हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा , हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद इस्लाम लाने वालों में पाँच व्यक्ति थे जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तब्लीग़ से ईमान लाए और ये सब के सब इस्लाम में ऐसे जलील-उल-क़दर और आली मर्तबा अस्हाब निकले कि चोटी के सहाबा में शुमार किए जाते हैं। उनके नाम यह हैं। अव्वल हज़रत उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु जो ख़ानदान बनू उमय्या में से थे। इस्लाम लाने के वक़्त उनकी उम्र करीबा तीस साल की थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीसरे ख़लीफ़ा हुए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु निहायत शर्म करने वाले, बावफ़ा, नर्म-दिल, दया करने वाले और दौलतमंद आदमी थे। इसलिए कई अवसरों पर उन्होंने इस्लाम की बहुत बहुत माली ख़िदमात कीं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का अंदाज़ा इस बात से भी हो सकता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें पै दर पै अपनी दो लड़कियां शादी में दीं जिसकी वजह से उन्हें ज़ू नूरैन कहते हैं।

दूसरे अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो ख़ानदान बनू ज़ुहरा से थे जिस ख़ानदान से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की माता थीं। निहायत समझदार और बहुत सुलझी हुई तबीयत के आदमी थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का प्रश्न उन्ही के हाथों से तै हुआ था। इस्लाम लाने के वक़्त उनकी उम्र करीबा तीस साल की थी। अहद-ए-उसमानी में फ़ौत हुए।

तीसरे साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो उस वक़्त बिल्कुल नौजवान थे अर्थात उस वक़्त उनकी उम्र उन्नीस साल की थी। यह भी बनू ज़ोहरा में से थे और निहायत दिलेर और बहादुर थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में इराक़ उन्ही के हाथ पर फ़तह हुआ। अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में फ़ौत हुए।

चौथे ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई थे। अर्थात सफ़ीया पुत्री अब्दुल मुतलिब के साहबज़ादे थे और बाद में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दामाद हुए। यह बनू असद में से थे और इस्लाम लाने के वक़्त ईनकी उम्र केवल पंद्रह वर्ष की थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ुबैर को ग़ज़वा-ए-ख़ंदक़ के अवसर पर एक ख़ास ख़िदमत सरअंजाम देने की वजह से हव्वारी का ख़िताब अता फ़रमाया था। ज़ूबैर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्दे हुकूमत में जंग-ए- जमल के बाद शहीद हुए।

पांचवें ताल्हा बिन उबैदा थे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़ानदान अर्थात क़बीला बनू तीम में से थे और उस वक़्त बिल्कुल नौजवान थे। तल्हा भी इस्लाम पर ख़ास फ़िदा होने वालों में से थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द में जंग जमल में शहीद हुए।

ये पांचों अस्हाब अशरा मुबशरा में से हैं अर्थात इन दस सहाबा में दाख़िल हैं जिनको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी भाषा मुबारक से विशेषता जन्नत की बशारत दी थी जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निहायत मुक़र्रब सहाबी और सहायक में शुमार होते थे।"

(सीरत ख़ातम नाबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, पृष्ठ 122-123)

कुफ़्फ़ार-ए-मिका ने इस्लाम क़बूल करने वालों पर तरह तरह के मज़ालिम किए, न केवल कमज़ोर और ग़ुलाम मुस्लमान ही उनके ज़ुलम-ओ-तशद्दुद का निशाना बने बल्कि ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी मुशरिकीन मक्का के मज़ालिम से महफ़ूज़ नहीं रहे। तारीख़ इस बात पर शाहिद है कि उन्हें भी तरह तरह के ज़ुलम-ओ-सितम का निशाना बनाया गया अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी। इसलिए सीरत हल्बिया में एक वाक़िया वर्णित है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब अपने इस्लाम का इज़हार किया तो नौफ़ल बिन अद्विया ने इन दोनों को पकड़ लिया। यह व्यक्ति क़ुरैश का शेर कहलाता था। उसने उन दोनों को एक ही रस्सी से बांध दिया। उनके क़बीला बनू तीम ने भी उन दोनों को न बचाया। इसी वजह से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो को करीनेन भी कहते हैं अर्थात दो साथ मिले हुए। नौफ़ल बिन अद्विया की क़ुव्वत और उसके ज़ुलम की वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि اَللّٰهُمَّ اكْفِنَا شَرَّ ابْنِ الْعَدَوِيَّةِ कि हे अल्लाह! इब्ने अद्विया के उपद्रव के मुक़ाबले में हमारे लिए तू काफ़ी हो जा।(सीरतुल हल्बिया, भाग अव्वल, पृष्ठ 395 बाब ज़िक्र अव्वलन्नास ईमानन बही (र) दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

उर्वा बिन ज़ुबैर ने वर्णन किया कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस से पूछा कि वह बदतरीन सुलूक मुझे बताएं जो मुशरिकीन ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया था। उन्होंने कहा कि एक-बार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद हराम के हतीम में नमाज़ पढ़ रहे थे कि عُقْبه بن اَبِي مُعَيط आया और उसने कपड़ा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गर्दन में डाल कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमका गला ज़ोर से घोंटा। इतने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो पहुंच गए और आकर उन्हों ने उक़बा का कंधा पकड़ा और उसे धकेल कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हटा दिया और कहा أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا أَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللهُ (अल् मोमिन:29) कि क्या तुम ऐसे व्यक्ति को मारते हो जो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है।

(सही अल् बुखारी किताब मनाक़िब अल्अन्सार बाब म लकियन्नबी (स) व असहाबहो मिनल मुश्रेकीन बे मक्कता हदीस 3856)

एक रिवायत में आता है कि एक दफ़ा मुशरिकीन ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि क्या तुम हमारे माबूदों के बारे में यह बात नहीं कहते। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ। इस पर वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गर्द जमा हो गए और उस वक़्त किसी ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि अपने दोस्त की ख़बर लो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो निकले और मस्जिद हराम पहुंचे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस हाल में पाया कि लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गर्द इकट्ठे हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा तुम लोगों का बुरा हो, أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا أَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ (अल् मोमिन: 29) क्या तुम महिज़ इसलिए एक व्यक्ति को क़तल करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुले खुले निशान लेकर आया है। इस पर उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छोड़ दिया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ लपके और उनको मारने लगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी हज़रत अस्मारज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमारे पास इस हालत में आए कि आप अपने बालों को हाथ लगाते तो वह आपके हाथ में आ जाते और आप कहते जाते थे कि تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَ الْإِكْرَامِ कि हे बुज़ुर्गी और इज्ज़त वाले! तू बाबरकत है।

एक रिवायत में आता है कि उन लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिर मुबारक और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाल मुबारक को इस ज़ोर से खींचा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अक्सर बाल मुबारक गिर गए। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बचाने के लिए खड़े हुए और वह कह रहे थे أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا أَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللهُ (अल् मोमिन: 29) क्या तुम महिज़ इसलिए एक व्यक्ति को क़तल करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है। क्या तुम इस व्यक्ति को इस वजह से क़तल करना चाहते हो कि वह कहता है कि अल्लाह मेरा रब है और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रो भी रहे थे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हे अबू बकर उनको छोड़ दो। उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है में उनकी तरफ़ भेजा गया हूँ ताकि मैं क़ुर्बान हो जाऊं। इस पर उन्होंने अर्थात काफ़िरों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 7 Thursday 27 January 2021 Issue No.4

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

छोड़ दिया। (सीरतुल हल्बिया भाग अव्वल, पृष्ठ बाब इस्तख़्फ़ाअ (स) व असहाबुहो फी दारे अरक़म बिन अबी अरक़म 417 , दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मर्तबा लोगों से पूछा कि हे लोगो! लोगों में सबसे ज़्यादा बहादुर कौन है? लोगों ने उत्तर दिया कि हे अमीरुल मोमेनीन आप रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जहां तक मेरी बात है मेरे साथ जिसने मुबारिज़त की, मैंने उस से इन्साफ़ किया अर्थात उसे मार गिराया परन्तु सब से बहादुर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं।

हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए बदर के दिन ख़ेमा लगाया। फिर हमने कहा कि कौन है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे ता आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक कोई मुशरिक न पहुंच पाए तो अल्लाह की क़सम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब कोई न गया परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी तलवार को उठाते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर खड़े हो गए अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कोई मुशरिक नहीं पहुँचेगा परन्तु पहले वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से मुक़ाबला करेगा। अत: वह सबसे बहादुर व्यक्ति हैं।

हज़रत अली कहते हैं कि एक दफ़ा की बात है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि क़ुरैश ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पकड़ा हुआ है। कोई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ग़ुस्सा उतारता। कोई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तंग करता और वे लोग कहते कि तुमने समस्त माबूदों को एक माबूद बना दिया है। अल्लाह की क़सम जो भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब आता हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो किसी को मार कर भगाते। किसी को बुरा-भला कह कर दूर करते और कहते तुम्हारी हलाकत हो, أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا أَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللهُ (मोमिन : 29) क्या तुम महिज़ इसलिए एक व्यक्ति को क़तल करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है। अत: हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी चादर हटाई और इस क़दर रोय कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की दाढ़ी गीली हो गई। फिर फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ कि क्या ऑले फ़िरऔन का मोमिन बेहतर था या हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो। ग़ालिबन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऑल फ़िरऔन के मोमिन का वर्णन इसलिए किया कि क़ुरआन-ए-करीम में यह आयत ऑल-ए-फ़िरऔन के उस व्यक्ति की तरफ़ मंसूब है जो अपने ईमान को छुपाए हुए था और फ़िरऔन के दरबार में यह कह रहा था कि أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا أَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللهُ इस पर लोग ख़ामोश हो गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम! हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की एक घड़ी ऑल-ए-फ़िरऔन के मोमिन की ज़मीन भर की नेकियों से बेहतर है क्योंकि वह व्यक्ति अपने ईमान को छुपाता था और यह व्यक्ति अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने ईमान का ऐलान करता था।(अबू बकर अल् सिद्दीक़ शख़सियत व अस्रुहू लेखक डाक्टर अली मुहम्मद अस्सलाबी., पृष्ठ 38 बेरूत 2003 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "जब हम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी के वाक़ियात को देखते हैं तो हमें यह दावा एक हक़ीक़त बन कर नज़र आता है और हमें क़दम क़दम पर ऐसे वाक़ियात दिखाई देते हैं जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस अज़ीमुश्शान मुहब्बत और शफ़क़त का सबूत हैं जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बनीनौ इन्सान से थी। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा-ए-वाहिद का पैग़ाम पहुंचाने के लिए साल-हा-साल तक ऐसी तकालीफ़ में से गुज़रना पड़ा कि जिनकी कोई हद नहीं। एक दफ़ा ख़ाना काअबा में कुफ़्फ़ार ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गले में पटका डाल कर इतना घोंटा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी आँखें लाल हो कर बाहर निकल पड़ी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सुना तो वह दौड़े हुए आए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस तकलीफ़ की हालत में देखकर आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आँखों में आँसू आ गए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन कुफ़्फ़ार को हटाते हुए कहा। ख़ुदा का ख़ौफ़ करो। क्या तुम एक व्यक्ति पर इस लिए ज़ुलम कर रहे हो कि वह कहता है ख़ुदा मेरा है।" (तफ़सीर कबीर, भाग 7 पृष्ठ 63-64)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "एक दफ़ा चंद दुश्मनों ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अकेले में पा कर पकड़ लिया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गले में पटका डाल कर उसे मरोड़ना शुरू किया। क़रीब था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान निकल जाए कि संयोग से अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आ निकले और उन्होंने मुश्किल से छुड़ाया। इस पर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस क़दर मारा पीटा कि वह बेहोश हो कर ज़मीन पर पड़े।"

(चश्म-ए-मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 257-258)

ग़ुलामों को आज़ाद करवाने के बारे में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में रिवायत में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब इस्लाम क़बूल किया तो उनके पास चालीस हज़ार दिरहम थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे अल्लाह की राह में ख़र्च किया और उन सात को आज़ाद करवाया जिनको अल्लाह की वजह से तकलीफ़ दी जाती थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो, आमिर बिन फ़ुहीरा रज़ियल्लाहु अन्हो, ज़ीनरह, नादिया और उनकी बेटी, बनू मूअम्मल की एक लौंडी और उम्मे उबैस को आज़ाद करवाया।(अल्असाबा फी तमीज़िस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 247 अब्दुल्लाह बिन उसमान, दारुल फ़िक़र बेरूत 2001 ई.)

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो बनू जुमह के ग़ुलाम थे और अमय बिन ख़लफ़ आप रज़ियल्लाहु अन्हो को शदीद तकलीफ़ पहुंचाया करता था।

(ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारफ़ अलसहाबा, भग अव्वल, पृष्ठ 283 वर्णन बिलाल बिन रबाह दारुल फ़िक्र बैरूत 2003 ई.)

एक रिवायत में है कि जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ईमान लाए तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो को उनके मालिकों ने पकड़ कर ज़मीन पर लिटा दिया और उन पर पत्थर मारे और गाय की खाल डाल दी और कहने लगे कि तुम्हारा रब लात और उज्ज़ा है। परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हो अहद, अहद कहते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आए और कहा कि कब तक तुम इस व्यक्ति को तकलीफ़ देते रहोगे। रावी कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो को सात औक़िया में ख़रीद कर उन्हें आज़ाद कर दिया अर्थात चालीस दिरहम का एक औक़िया है दो सौ अस्सी दिरहम में ख़रीदा। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह वाक़िया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में वर्णन किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर! मुझे भी इस में शरीक कर लो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैंने उसे आज़ाद कर दिया है। (अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साद, भाग 3, पृष्ठ 175 "बिलाल बिन रिबाह' दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (लुग़ात अलहदीस, भाग 1, पृष्ठ 82 नुमानी कुतुब ख़ाना लाहौर)

हज़रत आमिर बिन फ़हीर: रज़ियल्लाहु अन्हो एक स्याह फ़ाम ग़ुलाम थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो तुफ़ैल बिन अब्दुल्लाह बिन सन्जारह के ग़ुलाम थे जो कि माता की तरफ़ से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई थे। हज़रत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो इस्लाम लाने वाले साबक़ीन में शामिल थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अल्लाह ताआला की राह में तकालीफ़ पहुंचाई गईं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपको ख़रीदा और आज़ाद कर दिया।

(ओसोदुल ग़ाबा भाग 3 पृष्ठ 31आमिर बिन फ़हीराह दारुल क़ुतुब इल्मिया 2003 ई.)

हज़रत ज़ीनरह रूमी इस्लाम में सबक़त ले जाने वाली महिलाओं में से थीं। उन्होंने इस्लाम के आग़ाज़ में ही इस्लाम क़बूल कर लिया था। मुशरिकीन आप रज़ियल्लाहु अन्हो को कष्ट देते थे। यह कहा जाता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो बनू मख़्ज़ूम की लौंडी थीं और अबु जहल आप रज़ियल्लाहु अन्हो को कष्ट दिया करता था और कहा जाता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो बनो बनू अब्दुलदार की लौंडी थीं। जब उन्होंने इस्लाम क़बूल किया तो उनकी बीनाई चली गई। इस पर मुशरिकीन ने कहा कि लात और उज्ज़ा ने इन दोनों के इंकार करने की वजह से ज़ीनर: को अंधा कर दिया है। इस पर हज़रत ज़ीनर: ने कहा कि लात और उज्ज़ा तो यह भी नहीं जानते कि उन दोनों की इबादत कौन करता है, मुझे क्या अंधा करना था। उनको तो ख़ुद नज़र नहीं आता। यह तो आसमान से है। अल्लाह की मर्ज़ी मेरी नज़र चली गई और मेरा रब मेरी बीनाई लौटाने पर क़ादिर है। यह उत्तर दिया काफ़िरों को। अगले दिन उन्होंने इस हालत में सुबह की, रात सोएँ अगले दिन जब उठीं तो अल्लाह ताआला ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो की बीनाई लौटा दी थी, नज़र ठीक हो चुकी थी। इस पर क़ुरैश ने कहा कि यह तो मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जादू की वजह से हुआ है। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वे तकालीफ़ देखें जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो को पहुंचाई जाती थीं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमने उनको ख़रीदा और आज़ाद कर दिया।

(ओसोदुल ग़ाबा भाग 6 (निसा) ज़नीरह अर्रूमिया पृष्ठ 127 दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई.)

यह वर्णन अभी आइन्दा भी इंशा अल्लाह चलेगा। आज़ादी के बारे में कुछ और वाक़ियात हैं।

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad